मोहन राकेश

राजपाल

पैर तले की ज़मीन



पैर तले की ज़मीन

इस नाटक के अभिनय-प्रदर्शन, नाट्य-पाठ, अनुवाद, प्रसारण तथा फिल्मीकरण के लिए निम्नलिखित पते पर पूर्व अनुमति लेना अनिवार्य है :

श्रीमती अनीता राकेश
सी-7/57, ईस्ट ऑफ कैलाश, नयी दिल्ली-110065

ISBN : 9788170282778
संस्करण : 2017

PAIR TALE KI ZAMEEN (Play) by Mohan Rakesh

राजपाल एण्ड सन्ज़
1590, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट-दिल्ली-110006
फोन: 011-23869812, 23865483, फैक्स: 011-23867791
website : www.rajpalpublishing.com
e-mail : sales@rajpalpublishing.com
www.facebook.com/rajpalandsons

पैर तले की ज़मीन

(नाटक)

मोहन राकेश

राजपाल

दो शब्द

'पैर तले की जमीन' को अपनी आंखें मुंद जाने से बरसों पहले राकेश जी ने लिखा था (उसके पहले अंक के तो एकाधिक मसविदे तैयार हुए थे) और जिस दिन वे मुझे एकाएक धोखा देकर सदा के लिए चले गये, तब भी टाइपराइटर पर इसी नाटक का एक पृष्ठ-आधा टाइप किया हुआ, आधा खाली—लगा रह गया था और कई पृष्ठ, दो-तीन पंक्तियां टाइप और फिर रद्द किये हुए, वेस्ट-पेपर बास्कट में पड़े मिले। 'आधे-अधूरे' की मंचीय और साहित्यिक सफलता के बाद उनके नाटककार की कोई महत्त्वाकांक्षा इसी नाटक में केन्द्रित और निहित हो रही थी—उनके नाटकों के पाठकों और दर्शकों की आशाएं भी।

यह नियति की विडम्बना है कि समूचे नाटक की संयोजना को पका लेने के बाद राकेश जी 'पैर तले की जमीन' को अधूरा छोड़ गये—शोधा, मांजा अंतिम मसविदा केवल पहले अंक का ही कर पाये। दूसरे अंक की परिकल्पना, उसके दृश्यबन्ध के खाके, इस अंक के आधे संवाद, उनकी नोट-बुक्स में ही मिले।

राकेश जी ने नाटक की पांडुलिपि प्रकाशकों को सौंपने की तारीख भी तय कर रखी थी जो, काल यदि उनसे और हमसे इस बीच यह क्रूर खिलवाड़ न करता तो, एक-दो महीनों से अधिक न टलती। अपने भीतर वह 'पैर तले की जमीन' के रिहर्सल ही नहीं, पूरा नाटक, पूरी साज-सज्जा के साथ अंतिम रूप से खेल चुके थे—एक माने में अब केवल टाइपराइटर पर कागज चढ़ा कर उसे उतारना ही बाकी था और विश्वनाथ जी को उसे प्रकाशनार्थ दे देना।

किसी कृति की अधूरी छूटी रचना को पूरा करने के लिए बड़े साहब और रागात्मक तद्रूपता आवश्यकता होती है। कमलेश्वर जी ने राकेश जी से अपने कितने गहरे लगाव के नाते इस चुनौती को स्वीकार किया होगा, इसका कुछ अनुमान लगाया जा सकता है। परिणामस्वरूप 'पैर तले की जमीन' की प्रति आज आपके हाथों में है। इसे इस आकर्षक रूप में छापने का श्रेय विश्वनाथ जी को है जो इस नाटक को राजपाल से प्रकाशित करवाने के लिए राकेश जी को भी कभी प्रतिबद्ध करवा चुके थे।

इतना कहकर ही अब आपके और नाटक के बीच से मैं हटती हूं।

—अनीता

पात्र

अब्दुला	:	बार का काउंटर क्लर्क
नियामत	:	बार का चपरासी
पण्डित	:	जुआरी, क्लब का सदस्य
झुनझुनवाला	:	जुआरी, क्लब का सदस्य
नीरा	:	टेबल टेनिस की अल्पवयस्क खिलाड़ी
रीता	:	नीरा की सखी
अयूब	:	एक युवक
सलमा	:	अयूब की पत्नी

अनुवर्तन एक

परदा उठने पर भटकती रोशनी में बार, लाउंज और लॉन तीनों खाली नजर आते हैं। जहां-तहां पड़ी जूठी प्लेटों, खाली और भरे हुए गिलासों तथा बिखरे हुए ताश के पत्तों से लगता है कि लोग अभी-अभी अफरा-तफरी में वहां से उठकर गए हैं। उस बिखराव और खालीपन को रेखांकित करता संगीत, जिसके मद्धिम पड़ने तक टेलीफोन की घण्टी बजने लगती है। तीन-चार बार घण्टी बज चुकने के बाद अब्दुल्ला हड़बड़ी में स्टोर से निकलकर आता है। अपनी घबराहट में टेलीफोन तक पहुंचने में वह एकाध जगह हल्की ठोकर खा जाता है। उसके रिसीवर उठाने पर टेलीफोन भी गिरने को हो जाता है, पर वह किसी तरह उसे संभाल लेता है।

अब्दुला : टूरिस्ट क्लब आफ इण्डिया।...कौन शफी साहब? सलाम साहब।...जी हां, भेज दिया है अयूब साहब को।...नहीं, अब कोई नहीं रहा यहां। पुल में दरार पड़ने की खबर पाते ही सब लोग क्लब खाली कर गए हैं।...हम भी बस चला ही चाहते हैं। स्टोर का सामान मैंने चेक कर लिया है, सिर्फ हिसाब की कापी चेक करनी रहती है। नियामत जब तक दरवाजे बन्द करता है, तब तक मैं...क्या? दरार डेढ़ फुट की हो गई? तब तो...जी मैं डर नहीं रहा। सिर्फ इतना बता दीजिए कि दोनों दरियाओं के बीच का फासला... अच्छा...हां हां,...और पानी का रंग?...नहीं, अभी तक मैं बाहर नहीं निकला।...हौसला न पड़ने की बात नहीं, यहां काम ही इतना था कि...वह मैं देख लूंगा। पर आपने बताया नहीं कि पानी का रंग...?

उधर से रिसीवर रख दिया जाता है।

हलो...हलो...हलो...

परेशान-सा पल-भर रिसीवर को देखता रहता है। फिर आसपास के बिखराव पर एक नजर डालता है। रिसीवर रखते हुए उसे आभास होता है जैसे उसने कोई आवाज सुनी हो। वह थोड़ा ठिठकता है, रिसीवर को फिर कान से लगाता है और रख देता है। फिर हल्के संदेह की दृष्टि से केबिन की तरफ देखता हुआ काउंटर पर आ जाता है। वहां रुककर भी पल-भर आवाज की टोह लेता रहता है। फिर जैसे यह निश्चय करके कि यह सिर्फ उसका वहम है, जल्दी-जल्दी काउंटर की दराजें खोलने-बन्द करने लगता है!

(दराजों में ढूढ़ंता हुआ) अब यह हिसाब की कापी कहां गई? (एक दराज से कापी निकालकर) रखो कहां, मिलती कहां से है!

जल्दी-जल्दी कापी के पन्ने पलटता हुआ उसमें पेंसिल से निशान लगाने लगता है।

एक और एक दो...दो...दो दो-दो-दो-दो-दो...दो और तीन पांच...पांच-पांच-पांच...पांच और ढाई साढ़े सात। बिक्री साढ़े सात पेग। और बाकी...(एक बोतल उठाकर) होनी चाहिए छह पेग और, है नहीं यह चार पेग भी।

घबराहट में कभी आगे और कभी पीछे की तरफ पन्ने पलटता है।

जैसे खुद बोतलें ही पी जाती हैं अपने अन्दर से। या कोई चुपके से इनके लेबल बदल देता है! (फिर एक बोतल उठाकर) सोलन का हिसाब...

फिर जैसे आवाज सुनकर ठिठकता है और केबिन की तरफ देखता है। केबिन के साथ की खिड़की का दरवाजा हवा से चरमराता है, फिर एकाएक बन्द हो जाता है। बोतल उसके हाथ से गिरते-गिरते बचती है। वह उसे काउंटर पर रखकर फिर कापी में व्यस्त हो जाता है।

सोलन का हिसाब ब्लैक एण्ड ह्वाइट से मेल खाता है और ब्लैक एण्ड ह्वाइट का हिसाब...वह तो मेल खाता ही नहीं। खुदा की भी जैसे अब्दुल्ला से ही दुश्मनी है। जो भी

गड़बड़ करनी होती है, मेरी ही कापी में करता है। (पल-भर सोचता रहकर) मेरा क्या है...मैं यहां हिंदसे बदल देता हूं। हिंदसे बदलना कोई बेईमानी नहीं। बेईमानी हो जो मैंने खुद पी हो और हिसाब न रखा हो। (बदले हिंदसों को गौर से देखता हुआ) मालिक बस कापी देखता है। यह नहीं कि दूसरा कितनी जानमारी से काम करता है।...और सब लोग तो जान बचाकर पुल के उस तरफ जा पहुंचे हैं और मियां अब्दुल्ला अब तक यहां बोतलों में शराब नाप रहा है। कापी में हिंदसे ठीक कर रहा है! अगर कहीं...

इस बार केबिन से बहुत साफ आवाज सुनाई देती है...गिलास से मेज पर ठक्-ठक् करने की। उसकी पेंसिल लिखते-लिखते टूट जाती है।

ओफ्फोह! (केबिन की तरफ देखकर) तो कम्बख्त नियामत ले नहीं गया मियां अयूब को अब तक यहां से? और मैंने शफी साहब से कह दिया है कि...(काउंटर से आगे आकर ऊंची आवाज में) नियामत!...ओ मियां नियामत अली खां!

नियामत चाबियों का गुच्छा हाथ में लिए सामने की तरफ से आता है।

नियामत : आहिस्ता! तुझसे कितनी बार कहा है इस तरह मत चिल्लाया कर!

अब्दुल्ला : मैंने तुझसे क्या कहा था? अगर तुझसे नहीं हो सकता था वह काम, तो तू मुझसे साफ कह देता।

नियामत : तुझे एक चीज का पता है?

अब्दुल्ला : किस चीज का पता?

नियामत : कि तू, जिसका नाम अब्दुल्ला है, दुनिया में अपनी तरह का एक आदमी है?

अब्दुल्ला : मैं कहता हूं...

नियामत : एक ही आदमी जो बोलता भी जबान से है और सोचता भी जबान से है।

अब्दुल्ला : देख...

नियामत : वह जो होती है न छोटी-सी चीज...दिमाग नाम की...वह चीज खुदा ने तुझे दी ही नहीं।

अब्दुल्ला : हां, एक तुझी को तो दी है खुदा ने वह चीज!

नियामत : अगर ज़रा-सी भी दे देता तुझे...बस इतनी जरा-सी...

अब्दुल्ला : मैं तुझसे पूछ रहा हूं कि...(बात न याद आने से) वह क्या

था जो मैं तुझसे पूछ रहा था अभी?

नियामत : अभी तू सिर्फ चिल्ला रहा था। पूछना अभी बाकी था।

अब्दुल्ला : (याद करने की कोशिश में) मैं वहां से यहां आया था... क्यों आया था? तुझे मैंने आवाज दी थी...किसलिए दी थी?

नियामत : (चलने को होकर) मैं दरवाजे बन्द कर रहा हूं। तू सोच ले तब तक, किसलिए दी थी।

अब्दुल्ला : रुक-रुक-रुक-रुक-रुक। (दिमाग पर जोर डालता हुआ) वहां से यहां आया, यहां आकर आवाज दी...आवाज इसलिए दी कि कि कि कि...तू हमेशा यही करता है। कोई न कोई उलटी बात छोड़कर मुझे असली बात भुला देता है।

नियामत : असली बात तेरे लिए होती ही वह है जो तुझे भूल जाती है। जो याद रह जाए, वह सिर्फ बात होती है, असली बात नहीं।

चल देता है।

अब्दुल्ला : (उतावली में) ए ए ए...अब चल कहां दिया तू?

नियामत रुककर गहरी नजर से उसे देखता है। अच्छा हां...दरवाज़े बन्द करने...पर देख...(थूक निकल कर) मैं कह रहा था कि...कि हम लोग साथ ही चलेंगे बाहर। कहीं ऐसा न हो कि...कि तुझे याद न रहे और...मेरा मतलब है कि तू...तू दरवाजे बन्द करके उधर से ही चला जाय और...और...

नियामत : और तू अन्दर बन्द होकर शराब की बोतलें सूंघता रह जाय। च्-च्-च्-च्-च्-च्-च्!

अब्दुल्ला : मेरा यह मतलब नहीं है...

नियामत : तेरा यह मतलब नहीं है...मगर इसके सिवा कुछ और मतलब भी नहीं है...मतलब-मतलब तो तेरा कुछ है ही नहीं।

अब्दुल्ला : मैं तुझसे सिर्फ इतना कह रहा था कि...

नियामत : जरा कोशिश कर सोचने की...कि जब तक एक भी आदमी क्लब के अन्दर है, मैं यहां से कैसे जा सकता हूं? बड़े साहब के समाने जवाबदेही किसकी है—मेरी या किसी और की?

अब्दुल्ला : तू और तेरा बड़ा साहब। जो भी झूठ-सच उससे कह देता है, उसी पर वह सिर हिला देता है।

नियामत : हांऽऽऽ हिला देता है सिर! बार का ठेकेदार मुहम्मद शफी

है न वह, जो कापी में गलत हिंदसे देखकर भी चुप रह जाय।

अब्दुल्ला : देख...अगर तेरा मतलब है कि...?

नियामत : ...उसका नाम है सोमनाथ। टूरस्टि अफसर सोमनाथ। छड़ी और टोपी में से एक चीज हर वक्त अपने साथ रखता है। रात को सोते वक्त भी।

केबिन से फिर ठक्-ठक् की आवाज सुनाई देती है—पहते से ऊंची। अब्दुल्ला एक बार केबिन की तरफ देखकर फिर पलभर सीधी नजर से नियामत को देखता रहता है।

अब्दुल्ला : अब आया याद तुझे?

नियामत : यानी कि जो तुझे भूल गया था, वह मुझे याद आना था। खूब।

अब्दुल्ला : मैंने कहा नहीं था तुझसे कि मियां अयूब को जल्दी से बाहर पहुंचा दे, शफी साहब नाराज हो रहे हैं।

नियामत : शफी साहब नाराज हो रहे हैं।...यहां तो कम्बख्त को ढोकर ले जाने में कन्धे टूटने को आ गए और शफी साहब हैं कि नाराज ही हुए जा रहे हैं।

अब्दुल्ला : (असमंजस में केबिन की तरफ देखता हुआ) तो तेरा मतलब है कि तू...मियां अयूब को सचमुच पार छोड़ आया है...

नियामत : नाम मत ले उस आदमी का। पी-पीकर इस तरह धुत हो रहे थे जनाब कि ठीक दरार पार करते वक्त कन्धे से लुढ़क गये।

अब्दुल्ला : लुढ़क गये?

नियामत : और क्या? दरिया की तरफ लुढ़क गये।

अब्दुल्ला : (आतंकित) यानी कि...लुढ़क ही गये?

नियामत : मैं वक्त से संभाल नहीं लेता, तो अब तक सात टुकड़ों में बंटकर पानी में सात मील निकल गये होते।

अब्दुल्ला : (आश्वस्त) कह रहा है लुढ़क गये। जब संभाल लिया, तो लुढ़क कैसे गये? लुढ़क जाने का मतलब तो होता है कि...

केबिन में जोर की ठक्-ठक्। साथ गिलास टूटने की आवाज।

...तू मियां अयूब को अगर छोड़ आया है बाहर, तो यहां केबिन में यह कौन आदमी है?

नियामत : केबिन में एक नहीं, दो आदमी हैं।

अब्दुल्ला : दो आदमी?

नियामत : पण्डित और झुनझुनवाला।

अब्दुल्ला : (पस्त) ये दोनों यहीं हैं अब तक?

नियामत : ताश खेल रहे हैं।

फिर चलने लगता है।

अब्दुल्ला : ठहर ठहर ठहर। (उसके काफी नजदीक आकर धीमे स्वर में) बता ये इत्ती बड़ी-बड़ी लाशें...इन्हें साथ लेकर पुल कैसे पार करेंगे?

नियामत : चलकर...उड़कर...नहीं तो डुबकी लगाकर। आ गया समझ में? मैं जब तक दरवाजे बन्द करता हूं, तब तक तू इन्हें साथ लेकर...

अब्दुल्ला : (जैसे कोई अनहोनी बात कह दी गयी हो) मैं इन्हें साथ लेकर? (काउंटर पर लौटता हुआ) न-न-न-न-न-न। मुझे अभी बहुत काम है यहां।

जल्दी-जल्दी अपनी चीजें संभालने लगता है। मैं इन्हें साथ लेकर। हंः।

केबिन से पण्डित की आवाज :

पण्डित : यहां...किसी को...सुनता नहीं क्या? मुझे चाहिए...एक ब्लैक एण्ड ह्वाइट...बड़ा।

नियामत : तो?

अब्दुल्ला : (बांह सुजलाता हुआ) सवाल यह है कि...

नियामत : कि पैदायशी बुजदिल...इतना बड़ा होकर भी बुजदिल बना रहे...तो सिवा खरगोश के...उसे क्या कहा जा सकता है?—बस यही एक सवाल है। इतना ज़रा-सा।

जाकर केबिन का परदा हटा देता है। पण्डित और झुनझुनवाला रमी के पत्ते हाथों में लिये आमने-सामने की कुरसियों पर बैठे हैं। पण्डित की शेरवानी और कमीज के आधे बटन खुले हैं जिससे उसकी बनियान और काले डोरे का ताबीज बाहर नजर आ रहे हैं। चेहरे से लगातार हारने वाले आदमी की परेशानी झलकती है। झुनझुनवाला उस आदमी के अंदाज से, जो मुसकराने से लेकर जुआ खेलने तक हर काम नाप-तोल के साथ करता है, कुरसी की पीठ से टेक लगाये पण्डित के पत्ता चलने की राह देख रहा है। आंखों में जीतने वाले आदमी का आत्मविश्वास है।

पण्डित : (पत्तों की जोड़-तोड़ करता हुआ, बिना नियामत की तरफ

देखे) सुन गया अब तुम्हें?...एक ब्लैक एण्ड ह्वाइट। बड़ा।

एक पत्ता चलता है, जिसे उठाकर झुनझुनवाला अपने पत्ते खोल देता है।

झुनझुनवाला : डिक्लेयर।

पण्डित : (कुछ खीझ के साथ अपने नंबर गिनता हुआ) दस सात सत्रह दस सत्ताइस...सत्ताइस और पन्द्रह बयालिस। (पत्ते खोलता हुआ, नियामत की तरफ देखकर) नहीं सुना अब भी?

नियामत : माफ कीजिए, साहब। बार बन्द हो गया है।

पण्डित : बन्द हो गया है?...क्यों?

नियामत : क्योंकि...

पण्डित : मुझे एक ही और चाहिए। आखिरी।

अब्दुल्ला भी अब काउंटर से हटकर वहां आ जाता है।

अब्दुल्ला : आखिरी पेग अब पुल के उस तरफ चलकर मिलेगा, साहब!

पण्डित : क्यों?...उस तरफ चलकर क्यों मिलेगा?

अब्दुल्ला : क्योंकि पुल टूट गया है?

पण्डित : क्या कहा?...पुल टूट गया है?

झुनझुनवाला : (कागज पर हिसाब जोड़ता हुआ) बयालिस और एक सौ तीस पहले के...एक सौ बहत्तर। (हल्की हंसी के साथ) कहता है पुल टूट गया है और आखिरी पेग मिलेगा पुल के उस तरफ चलकर।...एक सौ बहत्तर के सत्रह बीस और दो सौ अस्सी कल तक के। कुल दो सौ सत्तानबे बीस।

अब्दुल्ला : आपने शोर नहीं सुना था?

पण्डित : सुना तो था कुछ शोर मगर...

झुनझुनवाला : उससे क्या होता है? शोर तो यहां होता ही रहता है। कभी इस चीज का, कभी उस चीज का।...दो अस्सी कम तीन सौ।

नियामत : वह शोर इसी चीज का था। सब लोग पांच मिनट में क्लब खाली करके चले गये थे, सिवाय...

अब्दुल्ला : मियां अयूब के...और आप लोगों के। मियां अयूब का तो खैर मुझे पता था, पर आप लोगों का...

नियामत : ये लोग पहले टैरेस पर थे। मैं टैरेस पर पहुंचा, तो यह लॉन में थे। मैं लॉन में आया, तो ये...

पण्डित : हम हवा की वजह से जगह बदल रहे थे। वहां पत्ते उड़ जाते थे। मगर...पुल क्या सचमुच टूट गया है?

झुनझुनवाला : कुछ और वजह होगी...पुल कैसे टूट सकता है? अगर टूट ही गया होता सचमुच, तो लोग यहां से कैसे जाते?

नियामत : पुल दर-असल अभी टूटा नहीं...
अब्दुल्ला : मगर टूटने वाला है।
नियामत : उसमें एक जगह दरार पड़ गयी है...
अब्दुल्ला : ...डेढ़ फुट बड़ी।
नियामत : (अब्दुल्ला से) दरार अब तक दो फुट से भी बड़ी हो चुकी है।
अब्दुल्ला : (थूक निगलकर) दो फुट से भी बड़ी?
नियामत : यह भी तब की बात है जब मैं अयूब साहब को छोड़कर उधर से आया था। (पण्डित से) इसलिए सारा क्लब खाली करा लिया गया है। इस वक्त सिर्फ हमीं चार आदमी हैं यहां।

तभी मंच के बाहर बायीं तरफ से टेबल-टेनिस खेलने की आवाज सुनाई देने लगती है।

अब्दुल्ला : (स्तब्ध) और ये कौन है उधर...टेबल-टेनिस रूम में?
नियामत : कौन लोग हो सकते हैं? मैंने अभी थोड़ी देर पहले एक-एक कमरा देख लिया था।
अब्दुल्ला : देख लिया था, तो ये खेल कौन कर रहे हैं उधर? हम लोगों के साये?

नियामत गहरी नजर से अब्दुल्ला को देखकर उधर को चल देता है। पण्डित अपनी शेरवानी के बटन बन्द करने लगता है। झुनझुनवाला मेज से कागज़-ताश समेटता है। अब्दुल्ला काउंटर पर आकर अलमारी में ताला लगाने की कोशिश करता है पर बदहवासी में वह उससे लग नहीं पाता।

पण्डित : (उठता हुआ) अगर चलते-चलते एक मिल जाता न आखिरी...

टेबल-टेनिस की आवाज रुक जाती है। नियामत बाहर निकलने लगता है कि उधर से तेज़ी से आती नीरा उससे टकरा जाती है। उसका रैकेट हाथ से छूटकर परे जा गिरता है।

नीरा : दिखता नहीं कोई सामने से आ रहा है?
झुनझुनवाला : (एक कागज पर रकम लिखकर पण्डित की तरफ बढ़ाता हुआ) दो सौ सत्तानबे रुपये बीस पैसे।
पण्डित : दो सौ कितने...?

फिर बैठकर कागज चेक करने लगता है। झुनझुनवाला सिगरेट सुलगा लेता है। नीरा रैकेट उठाकर उसी तेजी के साथ काउंटर के पास आ जाती है।

नीरा : (रैकेट काउंटर पर पटककर) एक गिलास पानी।
अब्दुल्ला : तू इस वक्त यहां क्या कर रही है?
नीरा : तुझसे पानी का गिलास मांग रही हूं...क्या कर रही है!
अब्दुल्ला : उधर और कौन था तेरे साथ टेबिल-टेनिस रूम में?
नीरा : था नहीं, थी। रीता। गुड्डो दीदी।
अब्दुल्ला : (शब्द चबाकर) गुड्डो दीदी! (नियामत को काउंटर की तरफ आते देखकर) तू इधर क्यों चला आ रहा है अब? जाकर ले आ न उसे जल्दी से...इसकी गुड्डो दीदी को। रीता...गुड्डो दीदी।
नीरा : गुड्डो दीदी वहां नहीं है अब।
अब्दुल्ला : वहां नहीं है अब? तो वहां से वह...
नीरा : उधर गयी हैं स्वीमिंग पूल पर? पर स्वीमिंग पूल का गेट तो मैं आजकल खोलता ही नहीं।
नीरा : तभी तो रोज दोपहर को हम नहा लेती हैं वहां...टूटी दीवार फांदकर। (अब्दुल्ला से) तुझसे मैंने पानी का गिलास मांगा था?
नियामत : तुम लोग रोज़ दोपहर को नहाती हो वहां?
नीरा : रोज़।
नियामत : तो मैं कल से...
अब्दुल्ला : हां, कल तक यहीं न बैठे रहना है तुझे। अब जाकर लाना नहीं है उसे...इसकी गुड्डो दीदी को...स्वीमिंग पूल से?
नीरा : वह खुद ही आ जाएगी अभी। गीले कपड़े बदलने गई है वहां।
अब्दुल्ला : तो अब तक क्या वह गीले कपड़ों में ही...
नीरा : तुझे मतलब? तू मुझे पानी का गिलास क्यों नहीं देता?
अब्दुल्ला : पानी-वानी का गिलास नहीं मिल सकता इस वक्त।
नीरा : पानी का गिलास नहीं मिल सकता?

नीरा पल-भर अब्दुल्ला को देखती रहती है, फिर नियामत की तरफ देखती है, फिर गिलास खुद ही खोजने लगती है।

पण्डित : सुना झुनझुनवाला...पुल टूट गया है। (हल्की हंसी के साथ) तब तो मौका ही इधर बैठकर पीने का है। नहीं?

अब्दुल्ला इस बीच ताले को ठोंक-पीटकर बन्द करने की कोशिश करता है, पर वह बन्द नहीं होता, तो उसे लटकता छोड़कर काउंटर से आगे आ जाता है।

अब्दुल्ला : मौका तो है साहब, पर पीने को कुछ नहीं है। बार बन्द हो चुका है। आपको जो कुछ चाहिए, वह अब उधर चलकर ही मिल सकता है।

पण्डित : मौका इधर बैठकर पीने का है, और जो कुछ पीना हो, वह उधर चलकर ही मिल सकता है। इधर बार बन्द हो चुका है, उधर पुल टूट गया है। वाह!

अखबार समेटकर शेरवानी के बटन बन्द करता हुआ केबिन से बाहर आ जाता है।

पर अभी बार बन्द कहां हुआ है? ताला तो ऐसे ही लटक रहा है।

नियामत : वह इस आदमी की बदहवासी की वजह से है। ऐसे वक्त इसके होश-हवास ठीक काम नहीं करते।

अब्दुल्ला खिसियाने ढंग से मुस्कराकर अपनी उंगलियां चटकाने लगता है।

झुनझुनवाला : होश-हवास तो इसके किसी भी वक्त ठीक काम नहीं करते—खासतौर से जब इसे घर से चिट्ठी आयी हो। क्यों अब्दुल्ला?

अब्दुल्ला पहले से ज़्यादा खिसियाना होकर अपने हाथों को देखता रहता है।

कितने दिन का हो गया अब तेरा लड़का? चार दिन का कि पांच दिन का?

अब्दुल्ला : चार दिन का ही समझिए अभी। आज रात को पूरे पांच दिन का होगा।

पण्डित : कितनी बीवियों के बाद यह पहला लड़का हुआ है? तीन बीवियों के बाद चौथी बीवी से न?

अब्दुल्ला : (एकाएक) ठहरो...

उसके स्वर की अकस्मिकता से पल-भर सब लोग स्तब्ध हो रहते हैं।

कुछ हो रहा है।

नियामत : तेरा मतलब है कि...

अब्दुल्ला : तुझे नहीं सुन रहा?

नियामत : (पल-भर सुनता रहता है) हां। लगता यही है।

पण्डित : सचमुच?

नियामत : लगता यही है।

झुनझुनवाला : तो क्या इतनी जल्दी...

अब्दुल्ला : मैं कब से कह रहा था।

पल-भर सब लोग खामोश रहते हैं। दूर से सुनायी देती हिलती चूलों की आवाज अधिक स्पष्ट होती जाती है। नीरा अचकचायी-सी एक से दूसरे की तरफ देखती रहती है।

नीरा : बात क्या है? यह आवाज...

पुल की कुछ कड़ियों के एक-साथ टूटने की आवाज। इसके बाद, अनुवर्तन के अन्त तक, बीच-बीच में एक-एक कड़ी के टूटने और पानी में बह जाने की आवाज सुनायी देती रहती है। रीता चेहरा हाथों से ढके घबरायी और हांफती हुई लॉन की तरफ से आती है।

रीता : होह! ओह! ओह!

नीरा : गुड्डो दीदी!

दौड़कर उसकी तरफ आती है, पर रीता उसके पास से गुजरकर आगे आ जाती है। पण्डित और झुनझुनवाला केबिन से उठ आते हैं। नीरा, जैसे कुछ भी समझ पाने में असमर्थ भौंचक्की-सी उन सबके बीच लौट आती है।

रीता : ओह!

हाथ हटाकर उन सबको देखती है और एक बार सिहरकर चेहरा फिर हाथों से ढक लेती है।

नीरा : (बांह खींचकर उसका हाथ चेहरे से हटाती हुई) क्या बात है, गुड्डो दीदी? बतातीं क्यों नहीं?

रीता : (किसी तरह बात कह सकने की कोशिश में) वही आदमी...उसके साथ वह औरत...

अब्दुल्ला : क्या?

नियामत : कौन आदमी?...कौन औरत?

पण्डित : क्या हुआ उनका?

झुनझुनवाला : कहां पर?

रीता : वहीं...वे दोनों थे वहां पर।

अब्दुल्ला : वहां...पुल पर? कौन?

रीता सिर हिलाती है।

रीता : वे दोनों थे वहां पर...मैं स्वीमिंग पूल से लौट रही थी।

अब्दुल्ला : लेकिन कौन?

पण्डित : आदमी कौन था?

रीता : वही...वह मिस्टर शफी का दोस्त...

अब्दुल्ला : मिस्टर अयूब?

चुभती नजर से नियामत को देखता है।

नियामत : वह नहीं हो सकता। उसे तो मैं...बहुत पहले उस पार छोड़ आया था।

रीता : हां, वही। और उसके साथ वह औरत...

अब्दुल्ला : उसके साथ औरत?

झुनझुनवाला : बात तो सुनने दो।

रीता : हां, एक औरत...
पण्डित : औरत!
झुनझुनवाला : उसके साथ?
नियामत : पर हुआ क्या उनका?
रीता : वे दोनों थे वहां पुल पर...जब पुल एकाएक हिलने लगा... बुरी तरह हिलने लगा...मैं स्वीमिंग पूल से लौट रही थी...
नीरा : पुल हिलने लगा?
रीता : और जब पुल टूटा...
नीरा : पुल टूट गया?
रीता : पूरा नहीं; पर किसी वक्त पूरा टूट सकता है।
नीरा : जरा देखें...

रीता को लिये-लिये उसी ओर जाती है, जिधर से रीता आई थी।

पण्डित : तब तो जरूर डर की बात है। क्यों अब्दुल्ला! कम से कम तेरे लिए तो है ही। क्योंकि किसी भी वक्त पुल पूरा टूट सकता है।
अब्दुल्ला : क्यों, सिर्फ मेरे लिए क्यों?
पण्डित : क्योंकि तुझे अपने लड़के को देखने जाना है। यहां तो न कोई देखने को है, न दिखाने को। उस पार पहुंच गए, तो वहां पड़े रहेंगे। न पहुंचे, तो यहां भी कुछ बुरा नहीं है। अच्छा-खासा बार है। अगर ज्यादा नहीं, तो दस-बीस दिन बैठकर पीने का सामान तो मिल ही जाएगा।
अब्दुल्ला : (अलमारी पर नजर डालकर) दस-बीस दिन? नहीं, सामान तो यहां इतना है कि...(सहसा रुककर) पर मैं भी क्या बात सोचने लगा? दस-बीस दिन हम लोग यहां थोड़े ही न पड़े रहेंगे? हां, इस बात का अफसोस जरूर है कि इतना सामान जो हम लोगों ने अभी-अभी मंगवाया था—यह सोचकर कि सीजन में काफी बिक्री होगी—वह सब ज्यों का त्यों पड़ा रहेगा। न जाने कितने दिन। शफी साहब का यह पहला साल है ठेके का, और अगर इसी साल उन्हें घाटा उठाना पड़ा, तो...अगले साल फिर अपने पर वही बेकारी आ जाएगी। चार साल बेकार रहने के बाद इस साल शफी साहब की मेहरबानी से यह नौकरी मिली थी—अब आगे इसका भी पता नहीं कि रहेगी या नहीं।
पण्डित : तेरी एक बड़ी खूबी है अब्दुल्ला कि तू दूर की बात पहले सोचता है, और नजदीक की बाद में।
झुनझुनवाला : बल्कि कहना चाहिए, कि नजदीक की बात तो ये कभी सोचता नहीं। क्यों अब्दुल्ला, पुल के दो तख्ते निकल गये

तो तुझे पूरा पुल टूटता नजर आने लगा। एक दिन के लिए बार बन्द हो गया। तो उससे शफी को घाटा भी पड़ गया, और तुझे अगले साल की बेकारी भी सूझने लगी।

अब्दुल्ला : मेरा दिल कमजोर है, इसलिए हाथ की मेहनत नहीं कर सकता साहब। जो कुछ आसरा है, वह सब नौकरी का ही है—और वह भी बारमैन की। ज़िन्दगी में और कोई काम, कोई हुनर नहीं सीखा—पच्चीस साल से सब यही काम करता आ रहा हूं। एक बार पहले भी इसी क्लब में बारमैन था, जब इसी तरह बाढ़ आयी थी। उस साल जो कुछ यहां हुआ, वह अगर आपको बताने लगूं, तो...

नियामत : तुझे वह किस्सा फिर से शुरू करना है, तो मैं बाहर से ताला लगाकर जा रहा हूं। तू यहां इत्मीनान से बैठकर किस्सा सुना। साथ इन्हें ब्लैक एण्ड ह्वाइट की बोतल भी खोल दे।

अब्दुल्ला : ब्लैक एण्ड ह्वाइट की बोतल! हंह! पहले ही मेरा ब्लैक एण्ड ह्वाइट का हिसाब मेल नहीं खा रहा। अभी जाकर शफी साहब को आज का हिसाब दूंगा, तो इसकी डांट और खानी पड़ेगी।...ठहर, हिसाब की कापी मैंने यहीं दराज में डाल दी है। वह तो मुझे साथ ले जानी चाहिए।

जल्दी से जाकर दराज खोलता है।

यह रही कापी, और यह...(अचानक पण्डित की तरफ देखकर) अरे! आपके बिल का पेमेंट तो अभी हुआ ही नहीं।

स्वेटर की जेब टटोलकर उसमें से एक बिल निकालता है।

यह आपका बिल है—तेरह रुपये कुछ पैसे का।

नियामत बिल उससे लेकर पण्डित को देता है।

नियामत : बिल तेरह रुपये कुछ पैसे का नहीं, सत्रह रुपये कुछ पैसे का।

अब्दुल्ला : सत्रह या तेरह जितने का भी है, जल्दी से इसका पेमेंट कर दें। (कापी निकालकर उसमें काट-छांट करता हुआ) मैं भी कहूं कि हिसाब में इतना फर्क कैसे पड़ रहा है।

पण्डित : (बिल लेकर) फर्ज कर इस वक्त इतने पैसे मेरी जेब में न हों।

अब्दुल्ला : आपकी जेब में, और पैसे न हों...यह कैसे हो सकता है?

पण्डित : जब और इतना कुछ हो सकता है, एक अच्छा खासा पुल

टूट सकता है, तो यही क्यों नहीं हो सकता?

नियामत : (चिढ़कर अब्दुल्ला से) अब खामखाह वक्त क्यों बरबाद कर रहा है? बिल का पेमेंट बाद में नहीं हो सकता? उधर पहुंचकर नहीं हो सकता?

पण्डित : क्यों...हो सकता है न उधर पहुंचकर? तो बस अभी चल रहे हैं...एक मिनट में।

शेरवानी की सलवटें निकालता हुआ बरामदे की तरफ चल देता है।

नियामत : देखिए मिस्टर पण्डित...

पण्डित : कहा है न अभी एक मिनट में चल रहे हैं। बस अब आ ही रहे हैं जरा उधर गुसलखाने तक होकर। आओ झुनझुनवाला, तुम भी हल्के हो लो...

हल्के से मुस्कराकर दोनों की तरफ देखता है और झुनझुनवाला के साथ बरामदे के बायीं तरफ से निकल जाता है।

नियामत : बस अब आ ही रहे हैं जरा उधर गुसलखाने तक होकर! जैसे यही गुसलखाना एक गुसलखाना है, और गुसलखाना मिलेगा इन्हें कहीं पर? (अब्दुल्ला की तरफ देखकर) और तुझे क्या काठ मार गया है, इस तरह खड़ा है जैसे किसी ने जिस्म से सारी हवा निकाल दी हो।

अब्दुल्ला : मैं सोच रहा हूं कि...

नियामत : सोच रहा है कि लड़के को देखने किस दिन पहुंच सकेगा? एक तू ही तो है जिसके लड़का हुआ है। और लोगों के भला लड़के-बच्चे होते हैं।

अब्दुल्ला : नहीं, मैं इस वक्त लड़के की बात नहीं सोच रहा...कैश की बात सोच रहा हूं।

नियामत : इस बिल का पेमेंट अभी नहीं हुआ, बस इसी से मरा जा रहा है?

अब्दुल्ला : नहीं, इसके पेमेंट की बात नहीं है...बात यह है कि जो बिल मैंने इसे दिया है, वह मुझे लगता है कि इसका बिल नहीं है। इसका बिल यह है...(स्वेटर की दूसरी जेब से एक और बिल निकालकर) तेरह रुपये सत्रह पैसे का। अभी यहां खड़े-खड़े मुझे याद आया कि तेरह रुपये सत्रह पैसे का बिल मैंने अपनी बायीं जेब में डाला था, दायीं जेब में नहीं। अब मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि जो दायीं जेब से निकला है, वह किसका बिल है।

नियामत : तेरे साथ हमेशा यही होता है, यह कोई आज नई बात नहीं

है। हर बार तनखाह काटने की नौबत आती है, हर बार वास्ते देकर माफियां मांगता है, पर हाल तेरा फिर भी वही का वही रहता है। अभी परसों जो घपला किया था, उसी की वजह से तो शफी साहब ने तुझे श्रीनगर जाने की छुट्टी नहीं दी।

इसी बीच नीरा और रीता बाहर से आती हैं, अपने बीच कुछ बातें करती हुईं।

अब्दुल्ला : पर बता, अब मैं इसमें क्या कर सकता हूं? बोतलों का हिसाब ठीक रखता हूं, तो किसी न किसी बिल में गड़बड़ हो जाती है। बिलों का हिसाब ठीक रखता हूं, तो बोतलों की नाप-जोख में फर्क पड़ जाता है। (दराज से एक पोस्टकार्ड निकालकर) इन्हीं सब उलझनों में घर से आयी चिट्ठी का जवाब भी अब तक नहीं दे पाया। वे लोग वहां न जाने क्या सोच रहे होंगे! कि कैसा आदमी है— खुशखबरी पाकर मिलने आना तो दूर, चिट्ठी की पहुंच तक का पता इससे नहीं दिया गया।

नीरा : अब इसे घर की याद सताने लगी! तू पानी का गिलास देगा या नहीं? कब से मांग रही हूं।

अब्दुल्ला : अब कुछ नहीं मिलेगा। गिलास भी अलमारी में बंद किए जा चुके हैं।

नियामत : (पास आकर) तू इससे झकझक करना बाद में, पहले मुझे कोहली साहब का नम्बर मांग दे।

नीरा : क्यों...डैडी का नंबर तुझे किसलिए चाहिए? उनसे तुझे क्या बात करनी है?

नियामत : मुझे उनसे कहना है कि वे खुद यहां तशरीफ ले आएं, और तुझे आकर यहां से ले जाएं।

नीरा : क्यों, डैडी क्यों मुझे आकर ले जायें? मैं जब अपने पैरों चलकर यहां आ सकती हूं, तो उसी तरह चलकर यहां से जा नहीं सकती? सुन रहा है अब्दुल्ला...गिलास निकाल कर पानी दे।

पण्डित इस बीच आता है और लाउंच की एक कुर्सी पर पसरकर अपना अखबार खोल लेता है। फिर जेब से सिगरेटकेस निकालकर देखता है कि उसमें कोई भी सिगरेट नहीं है। झुनझुनवाला भी आता है और दूसरी आराम कुर्सी पर पैर फैलाकर लेट-सा जाता है, बेखबर-सा, जैसे उसे नींद आ रही है।

पण्डित : अब्दुल्ला, गिलास निकालने के लिए अलमारी खोले, तो उसमें से मेरे लिए गोल्ड फ्लैक का एक पैकेट भी निकाल लेना। बड़ा वाला।

अब्दुल्ला : (थोड़ा झुंझलाकर) मैंने आपसे कह नहीं दिया मिस्टर पण्डित, कि आपको जो कुछ भी चाहिए, वह अब उधर चलकर ही मिल सकता है। छोटा वाला हो या बड़ा वाला।

पण्डित : अच्छा रहने दे। नाराज क्यों होता है?

माचिस की तीलियां जलाता-बुझाता हुआ अखबार पढ़ने लगता है।

अब्दुल्ला : (अब्दुल्ला का हाथ अलमारी की तरफ चला जाता है) इसे इस वक्त पानी के गिलास की पड़ी है, जबकि इतने लोग यहां सिर्फ इसी की वजह से अटके हुए हैं।

पण्डित : अब्दुल्ला, अगर गिलास निकाले, तो पैकेट भी जरूर निकाल लेना, हां।

नियामत : (अब्दुल्ला से) दे इसे पानी का गिलास, नहीं तो बाद में यह प्यासी ही दरिया में गोते खाती नजर आएगी। मैं तब तक पुल की तरफ देख आऊं...वह अयूब साहब...

फिर बरामदे की तरफ चल देता है। अब्दुल्ला त्योरी के साथ अलमारी खोलकर उसमें से गिलास निकालता है, और पानी भरकर उसे गुस्से से काउंटर पर रखता है।

अब्दुल्ला : यह ले पानी...

पण्डित : (अखबार से सिर उठाकर) अब्दुल्ला, सिगरेट का पैकेट।

अब्दुल्ला : ओह! सिगरेट का पैकेट

फिर से अलमारी खोलकर उसमें से पैकेट निकाल लेता है।

यह रहा आपका पैकेट। पर इसके पैसे...

पण्डित : पैसे तुझे बिल के साथ ही वसूल हो जाएंगे। जहां सत्रह रुपये कुछ पैसे हैं, वहां साथ ढाई रुपये और जोड़ लेना।

अब्दुल्ला : (कुछ हड़वड़ाहट के साथ जेबें और दराज टटोलता हुआ) बिल के साथ...पर हां...देखिए बात यह है कि...वह जो बिल है न...(दूसरा बिल निकालकर देखता है, पर कुछ सोचकर उसे फिर जेब में रख लेता है) खैर, यह बात इस वक्त नहीं, बाद में करने की है। ये पैसे अगर आप...खैर मैं इन्हें बिल में ही जोड़ देता हूं।

बिल फिर से निकाल कर उस पर पेंसिल से लिखने लगता है।

पण्डित : (उठकर उसकी तरफ आता हुआ) बिल तो तेरा मेरे पास है। यह तू किसके बिल में पैसे जोड़ रहा है?

अब्दुल्ला : मैंने आपसे कहा है न...यह बात मैं आपसे बाद में करूंगा। अभी, बाहर चलकर। इस वक्त पहले मैं...

नीरा इस बीच दोनों को देखती रहती है। फिर अचानक वहां से चल देती है।

नीरा : अरे दीदी, उन लोगों का क्या हुआ? वे लोग अब तक इधर आए नहीं...

अब्दुल्ला : ओ लड़कियो! तुम यहीं रहो, तुम अब कहां जा रही हो? हम सब अब बाहर चल रहे हैं।

नीरा : अभी आ रहे हैं। आओ दीदी...कहीं वो बह तो नहीं गये।

पण्डित पैकेट खोलकर सिगरेट सुलगा लेता है। एक क्षण गुड्डो को गौर से जाते देखता है। नीरा और रीता (गुड्डो) चली जाती हैं।

पण्डित : यह बड़ी वाली लड़की वही गुड्डो है न...वह लड़की...?

अब्दुल्ला : (अलमारी बन्द करके ताला लगाता हुआ) कौन लड़की? (ताला अचानक बन्द हो जाने से) लो, अब देखो कैसे अपने-आप ही लग गया!

पण्डित : (कश खींचकर) वही—मिस रीता दीवान—जिसने, सुना है, कल तुम्हारे उस आदमी को पीटने में कसर नहीं उठा रखी थी—क्या नाम है उसका—वह अभी जो पुल पार करके किसी और के साथ आया है?

अब्दुल्ला : पीटा होगा, मुझे कुछ मालूम नहीं।

पण्डित : तुझे सब मालूम है। शफी ने मुझे खुद बताया था कि तू इस बात से इतना घबरा गया था कि तेरे हाथ से ब्रांडी की बोतल गिरते-गिरते मुश्किल से संभली थी।

अब्दुल्ला : शफी साहब की बस यही आदत मुझे पसन्द नहीं। मुझे तो मना कर देंगे कि किसी से बात न करूं, और खुद हर-एक से बात करते फिरेंगे। मुझसे उन्होंने कसम खिलाकर कहा था कि...

पण्डित : यह बात किसी से नहीं कहनी है, यही न? मुझसे भी उसने कसम खिलाकर यही कहा था। वह बता रहा था कि उस आदमी ने—उसका नाम क्या है, मैं भूल रहा हूं...

अब्दुल्ला : मुहम्मद अयूब। अयूब साहब।

पण्डित : हां, कि अयूब ने गुसलखाने से बाहर गुड्डो का हाथ पकड़ लिया और कहा कि...

अब्दुल्ला इशारे से उसे बात करने से रोकता है। नीरा पहले ही की तरह जल्दी से बरामदे से आती

है।

नीरा : (आती हुई) मेरा रैकेट यहां तो नहीं रहा है? हां, यहीं तो है।

रैकेट उठाकर फिर चलने को होती है।

अब्दुल्ला : नीरा!

नीरा : (रुककर) क्या बात है?

अब्दुल्ला : तुझसे कह दिया है न कि अब तुझे उधर नहीं जाना है? अपनी गुड्डो दीदी को भी ले आ। सब लोग अभी बाहर चल रहे हैं। आज के लिए क्लब बन्द हो गया है।

नीरा : बन्द कैसे हो गया है? क्लब कभी इस वक्त भी बन्द होता है?

अब्दुल्ला : ऐसे बात कर रही है जैसे तुझे कुछ मालूम ही नहीं...कुछ सुना ही नहीं...वह भी नहीं सुना जो तेरी गुड्डो दीदी खुद कह रही थी... हद है! यह इतनी बेफिक्र बन रही है! अयूब साहब और औरत कहां हैं?

नीरा : वहीं बाहर होंगे...मैंने नहीं देखा...

अब्दुल्ला : पुल पूरा टूट गया है क्या? तूने पुल तो देखा? नहीं?

नीरा : टूट भी गया हो तो इसमें इतना घबराने की क्या बात है? अरे डेढ़-दो फुट की दरार पड़ी है...बस, चार-पांच फुट तक तो आदमी कूदकर ही पार कर सकता है।

पण्डित : पर यह आदमी पार नहीं कर सकता। इसका नाम अब्दुल्ला है। दुनिया का सबसे बुजदिल आदमी है।

अब्दुल्ला : आप लड़की से मजाक कर रहे हैं, मिस्टर पण्डित। यह वक्त मजाक करने का नहीं है।

पण्डित : तू बुजदिल आदमी है, यह तेरे ख्याल में मजाक की बात है? (नीरा से) अच्छा, तुम बताओ बेटे, यह आदमी चेहरे से ही बुजदिल नजर नहीं आता?

अब्दुल्ला : यह बहुत बुरी बात है, मिस्टर पण्डित! इस तरह एक बच्चे के सामने आप...

नीरा : बच्चे के सामने से तुम्हारा मतलब? बच्चा यहां कौन है? मैं? मैं बच्चा नहीं हूं।

अब्दुल्ला : नहीं, तू बच्चा नहीं है, मैं बच्चा हूं। यह तो ठीक है?

नीरा : मुझसे इस तरह बात करने की जरूरत नहीं।...तू बच्चा नहीं, मैं बच्चा हूं! तेरा ख्याल है मैं हर तरह की बात समझती नहीं?

अब्दुल्ला : (हल्की हंसी के साथ) तू सब तरह की बात समझती है। मैंने कहा है कि तू नहीं समझती? (पुचकारने के स्वर में) अच्छा, तो अब अच्छी लड़की बनकर यहीं खड़ी रह, तेरी

गुड्डो दीदी भी घुम-फिरकर यहीं आ जायेगी, इस वक्त अकेले और जायेगी कहां?

नीरा : (फिर वहां से चलती हुई) मैं अच्छी लड़की नहीं हूं...सुन लिया तूने? मैं बिल्कुल भी अच्छी नहीं हूं।...अच्छी लड़की बनकर यहीं खड़ी रह...क्यों खड़ी रहूं मैं?

बरामदे में पहुंचकर फिर एक बार मुड़कर उसकी तरफ देखती है।

देख लिया कितनी अच्छी लड़की हूं मैं?

बायीं तरफ से चली जाती है। अब्दुल्ला मुंह में कुछ बड़बड़ाता हुआ काउंटर से आगे आने लगता है कि तभी टेलीफोन की घण्टी बज उठती है। घण्टी सुनकर झुनझुनवाला भी नींद से जैसे जागता है, और झोंक में उठकर फिर बाथरूम की ओर चला जाता है।

अब्दुल्ला : (जाकर रिसीवर उठाता हुआ) यह पांचवी दफा शफी साहब का फोन आया है। (रिसीवर में) हलो...शफी साहब?...क्या?...कौन?...मिसेज हल्दवानी?...यहां की मेम्बरशिप फीस?...आज यहां की मेम्बरशिप फीस कुछ नहीं है।...मैं कौन हूं?...मैं कोई नहीं हूं...जी, मैं क्लब में कुछ भी काम नहीं करता, आप कल फोन कीजिएगा। (झटके से रिसीवर रखकर) कहती है बम्बई से आई हूं, मेम्बर बनना चाहती हूं। बस आज ही तो एक दिन है जिस दिन इसे मेम्बर बनना है।

टेलीफोन से हटकर आते हुए एकाएक जैसे कुछ सुनने के लिए रुक जाता है।

यह आवाज पहले से ऊंची नहीं हो गयी?

पण्डित : कौन-सी आवाज?

अब्दुल्ला : दरिया के पानी की।

पण्डित : तेरे वहम का भी कोई इलाज नहीं। अब और कुछ नहीं, तो दरिया की आवाज ही तुझे ऊंची सुनायी देने लगी।

अब्दुल्ला : वहम की बात नहीं है, आप ज़रा ठीक से सुनिए। मुझे लगता है कि दोनों दरियाओं में पानी बढ़ रहा है। मैं दोनों की आवाजें अलग-अलग सुन सकता हूं। (लॉन के पार टैरेस की तरफ इशारा करके) यह लिद्दर की आवाज है, और...(खिड़की की तरफ इशारा करके) यह आवाज शेषनाग की है। मैं इन आवाजों से अच्छी तरह वाकिफ हूं

क्योंकि... क्योंकि...आपको पता है मुझे दिल का दौरा कब से पड़ना शुरू हुआ है?

पण्डित : मेरा तो ख्याल है कि पैदा होने के दिन से पड़ना शुरू हो गया होगा।

अब्दुल्ला : नहीं साहब, मुझे दौरा पड़ना शुरू हुआ है तबसे जब पहले भी इसी तरह एक बार बाढ़ में यहां फंस गया था। तब क्लब का ठेका एक किश्तवारी के पास था, और मैं इसी तरह यहां बारमैन था। बाढ़ में क्लब के अन्दर चार आदमी फंसे रह गये थे—ठेकेदार, मैं और दो बैरे। इधर से लिद्दर का पानी यहां बरामदे तक आ गया था, और उधर से शेषनाग के पानी ने आधी गैलरी तोड़ दी थी। हम लोगों ने रसद का सामान साथ लेकर पूरा रात तब इस हॉल की छत पर काटी थी। पानी जिस तरह बढ़ रहा था उससे लगता था कि घण्टे दो घण्टे के अन्दर वह हमारे सिरों के ऊपर से होकर बहने लगेगा। उफ्! वह रात और उसके बाद आज की शाम—मुझसे तब से इस छत की तरफ आंख उठाकर देखा नहीं जाता। मुझे दिल का पहला दौरा उसी रात छत पर लेटे-लेटे पड़ा था।

पण्डित : खैर, आज तुझे दिल का दौरा नहीं पड़ेगा, क्योंकि उससे पहले ही हम लोग तुझे लेकर क्लब से बाहर पहुंच जाएंगे।

अब्दुल्ला : वह तो ठीक है साहब, मगर कहने की बात सिर्फ इतनी है कि...

नियामत घबराया हुआ बरामदे की तरफ से आता है।

नियामत : (पास आकर अब्दुल्ला से) पता है अब और क्या हुआ है?

अब्दुल्ला : क्या हुआ है?

नियामत : बस कुछ पूछ नहीं।

दायीं तरफ गैलरी के दरवाजे से जाने लगता है।

अब्दुल्ला : (घबराए हुए स्वर में) आखिर कुछ बताएगा भी कि क्या हुआ है।

नियामत : (जाते-जाते) अयूब साहब सचमुच फिर पुल पार करके अन्दर चले आये हैं—अपनी बेगम को साथ लेकर! मैं तो मजाक समझ रहा था...पुल के पार छोड़कर आया था उन्हें...

अब्दुल्ला : अपनी बेगम को साथ लेकर! उनकी बेगम इस वक्त यहां क्या करने आई हैं? सच-सच बता...

नियामत : यकीन नहीं है तो खुद आकर देख ले...गुड्डो ठीक कह

रही थी...वह आ गया है। मैं उधर उस तरफ भी देख लूं... क्या हाल है। शायद दरार...अब निकलना मुश्किल होगा।

परेशान-सा चला जाता है।

पण्डित : इसका मतलब है कि पुल से आने-जाने में कोई खास दिक्कत नहीं है।

अब्दुल्ला : हम यहां से उस पार जाएंगे या उस पार से आने वालों के लिए यहां रुकेंगे? यह भी कोई बात हुई! हम उधर जाने की तैयारी में हैं, लोग इधर आ रहे हैं!

पण्डित : लेकिन हम लोग चलेंगे तो अभी न, जब वे दोनों लड़कियां आ जाएंगी, अयूब साहब और उनकी बेगम आ जाएंगी... और जब नियामत आकर तुझे उधर की खबर देगा? तब तक तू जल्दी से मुझे एक पैग डाल दे।

अब्दुल्ला : ठहरिए...जरा गौर से सुनिए। सुन रहे हैं?

पण्डित : क्या?

अब्दुल्ला : वही दरिया की आवाज। ऐसा नहीं लगता जैसे कोई बड़े-बड़े पत्थरों को पहाड़ से नीचे ढकेल रहा हो?

पण्डित : मुझे ऐसा कुछ नहीं लग रहा। पानी की आवाज है—वैसी ही जैसी हमेशा सुनाई देती है।

अब्दुल्ला : हमेशा यह आवाज ऐसी सुनाई देती है?

पण्डित : दरियाओं में पानी ज्यादा होने से कुछ ऊंची सुनाई देती होगी—बस इतना ही फर्क है।

अब्दुल्ला : इतना ही फर्क है? पर आप शायद इस फर्क को नहीं समझ सकते। आपने वह रात मेरी तरह यहां काटी होती, तो आप भी इस फर्क को समझ सकते थे। मुझे लगता है कि अब और यहां रुकना खतरे से खाली नहीं है।

पण्डित : तो तू चाहता क्या है? तू अभी कहे, अभी यहां से चल दें।

अब्दुल्ला : चल तो दें...पर वे दोनों लड़कियां? और वो अयूब साहब और उनकी बेगम। इन सबको छोड़कर कैसे जाया जा सकता है? आप थोड़ी देर यहीं ठहरें, मैं अभी सबको जमा करके लाता हूं? (चलते-चलते) पर आप तब तक यहीं ठहरेंगे। कहीं जायेंगे नहीं...मैं अभी आ रहा हूं—बाहर सब लोग साथ-साथ चलेंगे। ठीक है न?

पण्डित : हां, ठीक है। मैं तेरे आने तक यहीं हूं—तू फिक्र मत कर।

अब्दुल्ला बरामदे में पहुंचकर फिर एक बार पीछे की तरफ देख लेता है।

अब्दुल्ला : बस, मैं अभी आ ही रहा हूं।

बायीं तरफ से चला जाता है। पण्डित अपना छोड़ा हुआ अखबार फिर से उठाकर काउंटर पर कुहनी

रखे उसमें से समाचार पढ़ने लगता है।

पण्डित : आदमी अन्तरिक्ष में...एक सौ नब्बे घण्टे पचपन मिनट! अन्तरिक्ष में आदमी की उड़ान के चार नये रिकार्ड।... चढ़ती कीमतों को नीचे लाना असम्भव। वित्त मन्त्री की नयी कर-योजना।...उत्तर प्रदेश के वैधानिक संकट के सम्बन्ध में अभी कोई निर्णय नहीं।...दो-दो रुपये के नये नोट...चीफ कमिश्नर का बयान—नल के पानी के कीड़े नुकसानदेह नहीं।

इस बीच पीछे लॉन में अयूब की दुबली-सी आकृति नजर आती है। जमा-जमाकर पैर रखता हुआ बरामदा पार करके वह हॉल में आता है। वह चौबीस-पच्चीस साल का नव-युवक है—चेहरे की हड्डियां निकली हुई हैं। गहरे रंग का सूट पहने हैं। टाई और कालर मुचड़ रहे हैं। हाथ में ह्विस्की का आधा खाली गिलास है जिसमें से वह अन्दर आकर एक हल्का-सा घूंट भरता है। बात करते हुए हर वक्त उसकी आवाज से नशे का असर झलकता है।

अयूब : (पण्डित के पास पहुंचकर) क्या कर रहे हो...क्या नुकसानदेह नहीं?

पण्डित चौंककर उसकी तरफ देखता है और अखबार तह करने लगता है।

पण्डित : नल के पानी के कीड़े। चीफ कमिश्नर का यह कहना है।

अयूब : बेचारा चीफ कमिश्नर! और बेचारे कीड़े! (एक और घूंट भरकर) अब्दुल्ला यहां नहीं है?

पण्डित : यहीं है, अभी आ रहा है।...तो नियामत आपको नहीं मिला...

अयूब : यह मैं कैसे कह सकता हूं कि वह मुझे नहीं मिला। या मिला था तो कब मिला था...मिलना होगा तो फिर मिल जाएगा...और एक बात और। मेरा ख्याल है, मैं उम्र में तुमसे काफी छोटा हूं।

पण्डित : हो सकता है। कम-से-कम देखने में तो ऐसा ही लगता है।

अयूब : तो आप वाप मत करो। आज तक किसी ने मुझे आप करके नहीं बुलाया। सिवाय नौकरों के। सुनने में अजीब-सा लगता है।

पण्डित : तो तुम...तुम्हें कुछ देर पहले नियामत पुल के पार छोड़कर आया था और तुम अभी-अभी फिर पुल पार करके अन्दर आए हो?

अयूब : अभी-अभी नहीं। थोड़ी देर पहले। यही दस-बीस मिनट। एक आदमी को यहां देखना था। डाक्टर को।

पण्डित : डाक्टर को देखना था? इस वक्त? यहां?

अयूब : और नहीं तो मैं लौटकर क्यों आता? उसी को देखने के लिए आधे क्लब का चक्कर लगा आया हूं। इधर के सब टैरेस, सब कोर्ट, मैंने देख लिए हैं। पर वह नहीं मिला। मिला सिर्फ यह ह्विस्की का गिलास—आधा पिया हुआ।

गिलास में से फिर घूंट भर लेता है।

पण्डित : पर डाक्टर तो शायद यहां चार-पांच बजे के बाद से आया ही नहीं। कम-से-कम मैंने उसे नहीं देखा।

अयूब : यही नियामत भी कहता था—कि वह नहीं आया। पर मैंने सोचा कि अब आये ही हैं, तो एक बार देख तो लेना ही चाहिए। पर डाक्टर तो डाक्टर, और भी कोई आदमजाद कहीं आसपास नजर नहीं आया। नजर आये कुछ ताश के बिखरे हुए पत्ते, कुछ मूंगफली के छिलके, कुछ चूरा हुए वेफर्ज, कुछ मसली हुई प्लास्टिक की थैलियां, और वह गिलास। इनके अलावा एक फिसले हुए पांव का निशान है, और एक सैंडल का बायां पैर। आदमी सच कितने डरपोक होते हैं! नहीं?

पण्डित : नियामत कह रहा था कि कोई और भी शायद तुम्हारे साथ पुल पार करके आया है।

अयूब : आया है? आया नहीं, आयी है। और आने-आने में ही अभी दरिया में गिर गयी होती।

पण्डित : दरिया में गिर गयी होती? पर कौन थी वह जो...?

अयूब : थी नहीं, है। वह मेरी बीवी है सलमा...आज मुझे यहीं उसे डॉक्टर से मिलाना था।

पण्डित : पर अगर टूटा पुल पार करने में सचमुच खतरा था, तो ऐसे में उसे पार कराना...यह बहुत जरूरी था क्या?

अयूब : खतरा-अतरा कुछ नहीं था। मैं एक छलांग में उस तरफ से इस तरफ आ गया था। पर बेगम बेचारी डर रही थी, इसलिए ऐसा हुआ। कहा न, डाक्टर से उसे मिलाना था।

पण्डित : डाक्टर से मिलाना था! कुछ तबियत खराब है?

अयूब : नहीं, कुछ रिश्ते खराब हैं। मेरे और मेरी बीवी के...हमें कुछ गहरी बातें डाक्टर से करनी थीं। डाक्टर मेरी बीवी का बचपन का दोस्त है...अब समझे कुछ तुम?

पण्डित : शायद नहीं।

अयूब : समझने की जरूरत भी नहीं होनी चाहिए। मियां-बीवी के रिश्ते में किसी तीसरे को पड़ना भी नहीं चाहिए...

पण्डित : लेकिन तुम तो खुद डाक्टर को बीच में डाल रहे हो। डाक्टर को सिर्फ तुम्हारी बेगम जानती हैं या तुम भी...

अयूब : (घूंट भरकर) जानने और जानने में भी फर्क होता है। नहीं! डाक्टर को जितना मेरी बीवी जानती है उतना शायद यहां और कोई नहीं जानता। यों डाक्टर और मैं हम दोनों एक मोहल्ले में रहे हैं, एक कालेज में पढ़े हैं और एक ही...खैर छोड़ो। यह मसला तुम्हारी समझ में नहीं आएगा...आना भी नहीं चाहिए...

अब्दुल्ला बड़बड़ाता हुआ बरामदे से आता है, और सीधा टेलीफोन की तरफ बढ़ता है। पण्डित उसे देखकर अपनी बात बीच में ही छोड़ देता है।

अब्दुल्ला : किसी को किसी चीज की फिक्र नहीं। अपनी जान की भी फिक्र नहीं। अब उनमें से एक का तो पता ही नहीं चल रहा है। न वह कार्ड रूम में है न टेबल-टेनिस रूम में, और न ही स्वीमिंग पूल पर। कब से कह रहा हूं कि यह वक्त किसी तरह जान बचाकर यहां से निकल चलने का है। पर कोई सुनता ही नहीं।

अयूब : क्यों अब्दुल्ला क्या बात है? इतना परेशान क्यों हो रहा है?

अब्दुल्ला : (अचकचाकर) आप...आप साहब? तो उस वक्त नियामत आपको पुल के पार छोड़कर नहीं आया था? आप फिर...

अयूब : वह मुझे छोड़ आया था। पर एक बार पार जाकर आदमी फिर वापस नहीं आ सकता क्या?

अब्दुल्ला : जी हां, वापस आने के लिए इससे अच्छा वक्त और कौन-सा हो सकता था! (जाकर रिसीवर उठाने लगता है, रिसीवर उठाकर) हलो एक्सचेंज—मुझे थ्री टू वन चाहिए —हलो हलो हलो—थ्री टू वन नहीं, थ्री वन टू चाहिए—थ्री, वन, टू रुका हुआ है! (रिसीवर रखकर) अब यह नंबर ही नहीं मिलने का।

पण्डित : तू किसे फोन कर रहा था?

अब्दुल्ला : शफी साहब को, और किसे करूंगा?

पण्डित : नंबर मिल जाय, तो जरा मुझे भी देना। मुझे भी उससे एक बात करनी है।

अब्दुल्ला : आपको भी इसी वक्त बात करनी है! इसके बाद भला कभी बात करने का वक्त मिलेगा?

अयूब : मियां अब्दुल्ला, तू खफा किस बात पर हो रहा है? वैसे जब तू खफा होता है, तो तेरे चेहरे पर अजब-सी रौनक

आ जाती है। और जब वह रौनक आ जाती है, तो तू खफा नहीं जान पड़ता। खैर, शफी से पूछ लेना कि अगर डाक्टर वहां उसके पास हो, तो एक बात उसे बता दे। कह दे कि हम दोनों यहां पहुंच गये हैं, और उसका इन्तजार कर रहे हैं।

अब्दुल्ला : कह दूं कि आप और आपकी बेगम यहां डाक्टर का इन्तजार कर रहे हैं? और इस तरह डाक्टर को और यहां बुला लूं?

अयूब : डाक्टर को हमने यहां मिलने का वक्त दे रखा था। और हमारा मिलना बहुत जरूरी है...क्योंकि बेगम नीम बेहोश-सी बाहर पोर्टिको में पड़ी हैं...

अब्दुल्ला : (टेलीफोन के पास से हटकर आता हुआ) बेगम नीम बेहोश-सी बाहर पोर्टिको में पड़ी हैं? और यह बात आप इतने इत्मीनान से मुझे बता रहे हैं?

अयूब : इस तरह घबराने की जरूरत नहीं। बाहर नियामत उसकी देखभाल कर रहा है।

अब्दुल्ला : यह बात आपको पहले ही मुझे नहीं बतानी चाहिए थी?

अयूब : पहले कब? तुझे देखने से भी पहले?

अब्दुल्ला : मिस्टर पण्डित, आप जरा टेलीफोन का ख्याल रखें। हो सकता है शफी साहब का, या मिस्टर सोमनाथ का कोई फोन आए। मैं तब तक जरा बाहर देखकर आता हूं।

दायीं तरफ से चला जाता है।

अयूब : (पण्डित से) एक सिगरेट दोगे?

पण्डित सिगरेट का पैकेट उसकी तरफ बढ़ा देता है। अयूब एक सिगरेट लेकर सुलगाने की कोशिश करता है, पर दो-तीन तीलियां जला चुकने पर भी सिगरेट सुलगने में नहीं आता।

अयूब : (हाथ की तीली तोड़कर) या तो तीलियों में आग नहीं रही, या शायद अपने में ही खींचने का दम नहीं रहा।

पण्डित : (अपना सिगरेट सुलगाने की कोशिंश करता हुआ) हवा में नमी बढ़ जाने से हमेशा यही होता है। कई-कई तीलियां बेकार चली जाती हैं, और मुंह से एक कश धुआं नहीं निकलता।...तुम्हारा ख्याल है, तुम्हारी बीवी की तबियत कुछ ज्यादा खराब है?

अयूब : लो, इस बार सुलग गया। हमेशा तभी सुलगता है जब आदमी हिम्मत हारने लगता है।...तुम कुछ कह रहे थे?

पण्डित : मैं तुम्हारी बीवी के बारे में पूछ रहा था—कि क्या उनकी

तबियत ज्यादा खराब है?

अयूब : उसकी तबियत उतनी खराब नहीं है जितना वह डर गयी है। डर गयी है क्योंकि उसका पांव फिसल गया था। अगर किसी तरह संभल न जाती, तो हो सकता था कि...

पण्डित : हां, तुमने बताया था कि वह दरिया में गिरते-गिरते बची हैं।

अयूब : अब मैं सोच सकता हूं कि वह क्यों इतना डर गयी है। वह डाक्टर को शायद फेस नहीं करना चाहती।

पण्डित : फेस नहीं करना चाहती?

अयूब : इस बात को छोड़ो। क्या तुम सोच सकते हो कि मियां-बीवी के रिश्तों के बीच अगर कोई छाया भी आ जाए, तो क्या से क्या हो सकता है...गलत मत समझना...मेरी बीवी की जिंदगी में और कोई नहीं है, पर मेरे लिए वह एक कब्रिस्तान बन गई है...औरत कब्रिस्तान क्यों बन जाती है?

पण्डित : क्यों बन जाती है! शायद उसके भीतर कुछ मर जाता है...

अयूब : लेकिन क्यों मर जाता है!

पण्डित : इसके लिए हर आदमी की अपनी वजह हो सकती है। उसकी अपनी वजह होगी।

अयूब : हां वह तो होगी ही।...शफी बता रहा था कि कलकत्ते में तुम्हारा ऊन का कारखाना है?

पण्डित : हां, है तो सही। पर उसका इस बात से क्या ताल्लुक है?

अयूब : ताल्लुक यह है कि तुम सिर्फ ऊन का काम कर सकते हो। आदमी के अकेले रहने की बात नहीं समझ सकते।...हर आदमी की अपनी अलग वजह हो सकती है; पर हर आदमी के उस वजह तक पहुंचने की भी तो कोई वजह होती है।

पण्डित : हूं।...कौन कह रहा था कि कल आते हुए तुम्हारी कार की कहीं टक्कर-अक्कर हुई थी?

अयूब : टक्कर नहीं हुई थी। सड़क टूटी थी, इसलिए गाड़ी धचका खाकर एक पत्थर से जा टकरायी थी। क्यों?

पण्डित : और, कि घर में सख्त लड़ाई-झगड़ा हुआ था, इसलिए तुम गाड़ी लेकर आधी रात को श्रीनगर से निकल पड़े थे?

अयूब : तो इसका मतलब है कि शफी तुम्हें ये सब बातें बताता रहा है। वह सचमुच बहुत डरपोक आदमी है।

पण्डित : डरपोक क्यों?

अयूब : सिर्फ डरपोक आदमी ही इस तरह हर बात के लिए गवाह जुटाता रहता है। वह डरपोक न होता तो तुम्हें मेरे बारे में

और मुझे तुम्हारे बारे में इतनी बातें न बताता। (गिलास पण्डित की तरफ बढ़ाकर) तुम लोगे थोड़ी-सी?

पण्डित : नहीं, अभी नहीं।

अयूब : ओ! तुम शायद जूटी शराब पीना पसन्द नहीं करते।...तुम मेरे घर के लड़ाई-झगड़े का जिक्र क्यों कर रहे थे?

पण्डित : इसलिए कि तुमने खुद इसका जिक्र मुझसे किया था... तुम अपनी बीवी की बात मुझसे कर रहे थे। नहीं?

अयूब : मैं अपनी बीवी की बात तुमसे कर रहा था...कौन-सी बात?

पण्डित : यही—औरत के कब्रिस्तान बन जाने की बात...शफी यह भी कह रहा था कि उसे डर है कि कहीं...

अयूब : कि कहीं मेरी बीवी खुदकशी न कर बैठे? (हंसकर) यह बात उसने एक बार हौले से मुझसे कही थी। तब मुझे लगा था कि यह वह इसलिए कह रहा है कि शायद मेरी बीवी को मुझसे पिण्ड छुड़ाने का यही एक रास्ता नजर आता है। लेकिन शफी मेरा दोस्त है, और भला आदमी भी है। इसलिए उसने बहुत हौले से यह बात मुझसे कही थी...मेरे साथ दोस्ती निभाने के साथ-साथ वह अपनी भलमनसाहत को भी खतरे में नहीं डालना चाहता। (एक घूंट में गिलास खाली करके) और वह जानता है कि मैं भला आदमी नहीं हूं।

गिलास को काउंटर पर लुढ़का देता है जिससे वह काउंटर के अन्दर की तरफ गिरकर टूट जाता है।

पर तुम जो बात कर रहे थे, मैं उसी को लेकर पूछता हूं... यह नहीं हो सकता कि आदमी शिद्दत से सोचने का आदी हो, इसलिए उसका घर में लड़ाई-झगड़ा हो? इसीलिए वह सामने के गड्डे को न देख सके, और उसकी गाड़ी एक पत्थर से जा टकराए?

पण्डित : और उसका हाथ एक गिलास को भी ठीक से न रख सके, जिससे वह दूसरी तरफ गिरकर टूट जाए।

अयूब : मैं गिलास की कीमत अदा कर सकता हूं, उनकी तुम फिक्र मत करो।

पल भर खामोश रहकर कश खींचता रहता है। फिर लाउंज में तिपाई की तरफ जाकर उस पर रखी ऐश-ट्रे में अपना सिगरेट बुझा देता है।

तुम एक काम कर सकते हो?

पण्डित : बताओ।

अयूब : खिड़की से यह देख सकते हो— कि वह अब तक यहीं है या ये लोग उसे बाहर छोड़ आए हैं?

पण्डित : किसे—तुम्हारी बीवी को?

अयूब : हां, उसी को।

पण्डित : तुम खुद खिड़की तक जाकर क्यों नहीं देखना चाहते?

अयूब : यह मैं भी नहीं जानता कि मैं खुद जाकर क्यों नहीं देखना चाहता।

पण्डित : यह इसलिए नहीं कि तुम मन में कहीं अपने को गुनहगार महसूस करते हो?

अयूब : गुनहगार? किस चीज का गुनहगार?

पण्डित : उसे साथ लाने का।

अयूब : मैं नहीं जानता। लेकिन मुझे अफसोस जरूर है। अगर डाक्टर उसे यहां मिल जाता, तो मुझे अफसोस न होता। पर अब मुझे लगता है कि...

अब्दुल्ला पहले से भी घबराया हुआ दायीं तरफ से आता है, और सीधा काउंटर की तरफ जाने लगता है।

अब्दुल्ला : मैं ही हूं जो हर एक की बात सुन लेता हूं। पर मेरी बात—मेरी बात कोई नहीं सुनता। कोई तब तक नहीं सुनने का जब तक कि पानी सिर से ही...(जबान काटकर) एक तो मेरी यह काली ज़बान नहीं रहती। कितना अपने को टोकूं कि ऐसी बात मुंह से न निकालूं, पर बात निकलेगी, तो बस ऐसी ही।

पण्डित : ध्यान से जाना, उधर कांच के टुकड़े बिखरे हैं।

अब्दुल्ला : (अलमारी की तरफ देखकर) कांच के टुकड़े? कांच के टुकड़े उधर कैसे बिखर गए?

पण्डित : कैसे भी बिखर गए—तू पांव संभालकर रखना। पहने भी तू यह घिसी चप्पल है जिसमें जाने कितने सूराख हैं।

अब्दुल्ला पैर संभालता हुआ काउंटर के पीछे जाकर जल्दी से अलमारी खोलता है, और उसमें से ब्रांडी की बोतल और एक गिलास निकालता है।

अब्दुल्ला : कहा नहीं था मैंने आपसे कि पानी की आवाज तेज होती जा रही है? पर आपका ख्याल था कि यह मेरा वहम है—मेरे कान अपने अन्दर से ही ऐसी आवाज सुन रहे हैं। अब चलकर देख लीजिए न कि दोनों दरिया आपस में मिल रहे हैं या नहीं—यह आवाज रोज इस तरह सुनाई देती है?

गिलास में थोड़ी-सी ब्रांडी डालता है। फिर उसमें से

थोड़ी वापस बोतल में डालता है।

पण्डित : यह ब्रांडी किसके लिए ले जा रहा है?

अब्दुल्ला : अयूब साहब की बेगम के लिए।

पण्डित : उनकी तबियत सचमुच ज्यादा खराब है क्या?

अब्दुल्ला : (गिलास लिए काउंटर से आगे आता हुआ) इसका मुझे पता नहीं। यह बात या तो अल्लाह मियां जानता है, या नियामत मियां। एक तरफ मुझसे कह रहा है कि जल्दी से उनके लिए ब्रांडी ले आ और दूसरी तरफ कह रहा है कि...

सिर हिलाकर चुप कर जाता है।

पण्डित : क्यों, चुप क्यों कर गया?

अब्दुल्ला : क्योंकि दूसरी तरफ के बाद एक तीसरी तरफ भी है, और तीसरी तरफ का ख्याल रखना सबसे ज़रूरी है।

दायीं तरफ से जाने लगता है। दायीं तरफ से चला जाता है। अयूब इस बीच लाउंच के सोफे पर आ बैठता है। पण्डित काउंटर के पास स्टूल पर बैठकर पलभर ब्रांडी की खुली बोतल को हल्के-हल्के हिलाता रहता है।

पण्डित : (अयूब से) तुम अपनी बीवी को देखने नहीं जाओगे? सोच क्या रहे हो?

अयूब : (सिर उठाकर) मैं!...मैं कुछ भी नहीं सोच रहा।

पण्डित : तुम बाहर जाकर उसे देखना भी नहीं चाहते?

अयूब : नहीं, अभी नहीं।...देखो, तुम यहां से डाक्टर को फोन कर सकते हो?

पण्डित : (दूसरा सिगरेट सुलगाता हुआ) पर डाक्टर की डिस्पेंसरी में तो फोन है ही नहीं। न ही उसके क्वार्टर में है।

अयूब : और कहीं फोन कर सकते हो?

पण्डित : यह तुम खामखाह की बात नहीं सोच रहे?

अयूब : हां, है तो खामखाह की बात।...पर मुश्किल यह है...कि आदमी ज़्यादातर...खामखाह की बातें ही सोचता है। फर्क इतना है...कि मैं अपनी तरह से सोचता हूं...तुम अपनी तरह से सोचते हो...और जो समझता है कि वह नहीं सोचता...वह खामखाह अपने को धोखा देता है।

पण्डित : (बोतल हाथ में लेकर) यह कौन-सा लेबल है? एक्शा नंबर बन! बहुत गर्म ब्रांडी होती है। नहीं?

अयूब : हां, बहुत गर्म होती हे...अगर आदमी पी ले, तब।

तुम्हारा मन है...तो क्यों नहीं थोड़ी-सी गिलास में डाल लेते?

पण्डित : वह आदमी यहां नहीं है...अब्दुल्ला। वह यहां होता, तो...

अयूब : (हल्के-से-हसंकर) यह भी खामखाह की बात नहीं है? (उठकर उधर आता हुआ) लाओ, मैं तुम्हें डाल देता हूं।

वह अभी काउंटर के पास नहीं पहुंचता कि टेलीफोन की घण्टी बज उठती है। पण्डित जाकर रिसीवर उठाता है। अयूब तब तक जाकर उसकी जगह स्टूल पर बैठ जाता है और बोतल हाथ में लेता है।

पण्डित : (रिसीवर में) हलो...कौन बोल रहा है?...शफी? मिस्टर सोमनाथ?...हां-हां, यहीं है...ज़रा बाहर गया है।...वह और अब्दुल्ला दोनों हाल में नहीं हैं।...मैं पण्डित बोल रहा हूं...बस शुक्रिया...जी नहीं, तीन-चार और लोग भी हैं... हां, वह भी यहीं हैं...बस अब चलने को ही है...जरा इसलिए रुक गए थे कि...मिस्टर अयूब डाक्टर को खोज रहे थे। मैं फोन करने ही वाला था...हां...अगर किसी तरह आप डाक्टर को खबर भिजवा दें...क्या...हां...क्या? सेफ नहीं है?...किसने, एक्स. ई. एन. ने कहा है?...कि कोई भी पुल पर न जाए? तो कब तक इन लोगों को यहां...? आप फिर फोन करेंगे? कितनी देर में?...हां, मैं ख्याल रखूंगा। आप ज़रा जल्दी ही पता दें।...नहीं-नहीं-नहीं, मेरे यहां रहते आपको फिक्र करने की ज़रूरत नहीं।...हां, ठीक है। ठीक है।...ठीक है। अच्छा। (रिसीवर रखकर) इन लोगों ने पुल पर से जाने की मनाही कर दी है।

अयूब : राख झाड़ दो...नहीं तो कपड़ों पर गिर जाएगी।

पण्डित हाथ के सिगरेट को देखता है। पर उसकी लम्बी राख झाड़ने से पहले ही उसकी शेरवानी पर गिर जाती है।

देखा...गिर गई न!

पण्डित : (शेरवानी से राख झाड़ता हुआ) तुम क्या समझते हो... डेढ़-दो घण्टे में पुल ठीक किया जा सकता है? मिस्टर सोमनाथ कह रहे हैं कि एक्स. ई. एन. अभी मजदूर लगा रहा है...उसने अपना आदमी गांव में मजदूर जमा करने भेजा है।

अयूब : तुम जानते हो यहां का एक्स. ई. एन. कौन है?... मिरजा!...बी. के. मिरजा। उसे हमेशा पुल तुड़वाने का काम दिया जाता है...पुल बनवाने का नहीं।

पण्डित : पर मिस्टर सोमनाथ कह रहे हैं कि...

अयूब : मिस्टर सोमनाथ।...ह-हा! मिस्टर सोमनाथ का मिनिस्ट्री में खासा हत्था न होता, तो वे आज जेल में होते।...मिस्टर सोमनाथ।

पण्डित : तो तुम्हारा मतलब है कि...

अयूब : (गिलास में ब्रांडी डालता हुआ) ब्रांडी पियो थोड़ी-सी... मेरा मतलब कुछ नहीं है।

पण्डित : ठहरो, मैं पहले जाकर इन लोगों को बता दूं...अब्दुल्ला और नियामत को। (चलते हुए) ये लोग इतनी देर से जाने बाहर क्या कर रहे हैं!

दायीं तरफ से जाने लगता है।

अयूब : सुनो।

पण्डित हल्की त्योरी के साथ उसकी तरफ देखता है।

यह ब्रांडी मैंने तुम्हारे लिए डाली है।

पण्डित कुछ कहने को होता है, पर जैसे अपनी बात चबाकर बाहर निकल जाता है। अयूब स्टूल से उठकर लाउंज के बीचोंबीच आ जाता है।

टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठती है। वह गिलास से एक घूंट भरकर उसे तिपाई पर रख देता है, और जाकर रिसीवर उठा लेता है।

अयूब : (रिसीवर में) हलो...हां-हां...हूं, यही पर हूं...खतरा?

खतरा कोई नहीं है...कौन? डाक्टर?...वह वहीं है?... तुम्हारे पास?...हां-हां, आई है...वह भी यहीं है...क्या?... वह आना चाहता था?...तो उससे कहो न, अब भी आ जाय...आसार अच्छे नहीं है... नहीं हैं, तो क्या हुआ? वह आना चाहे तो...क्या? किसका ख्याल?....अपना?... दूसरों का? दूसरा इस वक्त यहां कोई नहीं है...

सहसा उनकी नजर बरामदे से आती हुई गुड्डो पर पड़ती है। गुड्डो के चेहरे और हाव-भाव में वह ताजगी है जो तैरने के बाद शरीर में आ जाती है। उसके कपड़े बिल्कुल नयी तराज़ के हैं, पर भीगने से उनकी क्रीज मर चुकी है। बाल कटे हुए हैं, पर चेहरे पर सिवाय हल्की लिपिस्टक के कोई भी मेकअप नहीं है। वह अपना पर्स हिलाती हुई हाल में आकर कुछ परेशानी के साथ इधर-उधर देखती

है।

रीता : नीरू...ओ नीरू।

अयूब : (रिसीवर में)...मतलब उन लोगों में से कोई नहीं है... जिनका तुम जिक्र कर रहे हो।...और कौन है? आवाज... (हल्के से हंसकर) आवाजें बहुत धोखा दे सकती हैं।...तो भी?...तो भी कुछ नहीं...बस खास बात कुछ नहीं...हुई, तो मैं खुद तुम्हें फोन कर लूंगा...बाई-बाई।

लगता है दूसरी तरफ से अभी कुछ और कहा जा रहा था जब वह बीच में ही रिसीवर रख देता है।

रीता : (पास आती हुई) यहां किसी ने उस लड़की को तो नहीं देखा...नीरा को?

अयूब : यह नीरा कौन है? वही छोटी-सी लड़की जो कल...

रीता : (सहसा अयूब को पहचानकर) आप...तुम...यहां और कोई आदमी नहीं है?

अयूब : कई आदमी और हैं...पर वे सब बाहर हैं। (दायीं तरफ इशारा करके) बाहर...पुल के पास।

गुड्डो बिना कुछ कहे उस तरफ से बाहर जाने लगती है।

पर वह लड़की वहां नहीं है।

गुड्डो पलभर के लिए ठिठक जाती है।

मेरा ख्याल है वह तो शायद यहां क्लब में ही नहीं है।

रीता : (कुछ तीखी आवाज में) वह यहीं है।

मुड़कर बरामदे की तरफ जाने लगती है।

अयूब : कम-से-कम मैंने उसे नहीं देखा।...पर सुनो...गुड्डो रुककर तीखी नजर से उसकी तरफ देखती है।

रीता : क्या बात है?

अयूब : तुम्हें शायद...मुझसे डर लग रहा है मैं कहना चाहता था कि अच्छा होगा...अगर...तुम...

रीता : अगर मैं...

अयूब : अगर तुम...कल को...आज के साथ मिलाकर न देखो... हो सकता है कल की वजह से...

रीता : कल का जवाब तुम्हें कल ही नहीं मिल गया था?

अयूब : वही तो मैं कह रहा हूं...कि कल की बात...कल के साथ थी। और जहां तक आज का सवाल है...आज के लिए... मुझे तुमसे इतना ही कहना है कि...

रीता : आज के लिए मुझसे कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। अगर कोशिश करोगे कहने की, तो मैं अभी बाहर चल

कर...

अयूब : वह तो खैर मुमकिन ही नहीं है...मतलब बाहर चल सकना।...क्योंकि अभी-अभी अब्दुल्ला कह गया था कि फिलहाल किसी को भी उधर न आने दिया जाए?

रीता : (रुककर) क्यों? अब्दुल्ला कौन है हमें रोकने वाला?... और तुम कौन हो मुझसे यह कहने वाले?

अयूब : मैं कौन हूं? कोई भी आदमी कौन है, यह क्या वह कभी ठीक से बता सकता है?

रीता : तुम्हारा मतलब?

अयूब : मतलब हर आदमी अलग-अलग वक्त और अलग-अलग जगह पर अलग-अलग आदमी होता है। किसी एक वक्त और किसी एक जगह पर वह कौन है, क्या यह वह आसानी से बता सकता है?

रीता : (तुनककर) मुझसे इस तरह की बातें करने की ज़रूरत नहीं। मुझे लगता है कि कल जो तुम्हारे साथ हुआ था और होने को था, वह तुम्हें अब तक याद नहीं रहा।

अयूब : मैं वही तो कह रहा था कि मैं आज अपने बारे में कुछ भी कहूं, तुम मुझे वही आदमी समझोगी जिसे तुमने कल एक खास वक्त पर, एक खास शक्ल में देखा था। बहर-हाल, तुम शायद किसी को खोजती हुई यहां आई थीं। यह नीरा वही छोटी-सी लड़की है न जो कल बैडमिंटन कोर्ट में ऊधम मचा रही थी? मेरा ख्याल है वह यहां क्लब में नहीं है।

रीता : वह यहीं है। अभी थोड़ी देर पहले तक मेरे साथ थी।

अयूब : यह नीरा किसकी लड़की है?

रीता : क्यों? कोहली साहब की...

अयूब : ये वही कोहली साहब है न...जिसका एक मन्दिर भी है?

रीता : हां, वही।

अयूब : और जो रोज़ क्लब में आकर मन्दिर के चढ़ावे की शराब पीता है।

रीता : (सख्ती से देखकर) यह मैं नहीं जानती।

अयूब : (पीछे से) खैर छोड़ो, तुम्हें पता है कि यहां से बाहर जाने का पुल टूट गया है?

रीता : हां, मुझे पता है, उसमें दो-ढाई फुट की दरार पड़ गई है।

अयूब : यह खबर पहले की है। नयी खबर यह है कि पुल पर आने-जाने की बिल्कुल मनाही हो गई है।

रीता : यह तुमसे किसने कहा है?

अयूब : टूरिस्ट अफसर मिस्टर सोमनाथ ने। अभी थोड़ी देर पहले। टेलीफोन पर।

रीता : क्या कहा है उन्होंने?

अयूब : यही कि एक्स. ई. एन. का कहना है कि अब किसी को भी पुल पर आने-जाने न दिया जाये। इसलिए हो सकता है कि जितने लोग यहां हैं, उन सबको आज रात-भर यहीं रहना पड़े।

रीता : (कुछ घबराहट के साथ) रात-भर यहीं रहना पड़े? यह कैसे होगा?

अयूब : कैसे भी हो...अगर रहना पड़ेगा...तो रहना ही पड़ेगा।... बल्कि हो तो यह भी सकता है कि...हम लोग...आज रात के बाद कल दिनभर...और कल दिनभर के बाद फिर कल रातभर...यहीं रुके रहें...और पुल ठीक होने में न आए।

रीता : ये सब फिजूल की बातें हैं हम लोग सालों से यहां आते हैं। ऐसा कभी आज तक नहीं हुआ।

अयूब : इसलिए तो और भी मुमकिन है...कि आज ऐसा हो जाए...जो कभी नहीं हुआ होता...वह होने लगता है, तो... (चुटकी बजाकर) बस ऐसे हो जाता है।...बहरहाल...तुम उस लड़की को खोज रही थीं न...

रीता : (अपने को थोड़ा सहेजकर) हां, यह ज़रा-सी बात से नाराज़ होकर जाने किधर निकल गई है।

अयूब : लड़कियां...बहुत नाराज हो जाती हैं।...खास तौर से... छोटी उम्र की लड़कियां। नहीं?

रीता : (कुछ सकपकाकर) वह इसी बात पर तो मुझसे नाराज हुई है...कि उसे छोटी उम्र का क्यों समझा जाता है। इतना कह दिया कि यह बात भी जो वह पूछ रही है, क्या बच्चों की-सी नहीं है? और यह कि अभी चौदह की तो वह हुई नहीं, फिर अभी से अपने को बड़ी समझने का शौक उसे क्यों चर्रा आया है? बस इसी बात पर वह बिगड़ खड़ी हुई, और गुस्से में वहां से भाग गई। मेरा ख्याल था, भागकर वह इधर आई होगी, पर...

अयूब : ना...इधर वह नहीं आई।...कम-से-कम...मेरे सामने नहीं आई।

रीता : यह अभी की ही तो बात है...पांच-दस मिनट पहले की। अब एक तो अंधेरा उतर रहा है, और ऊपर से फिर बारिश के आसार नजर आ रहे हैं। इस आधे मील के टापू में कहीं उलटी-सीधी तरफ निकल गई तो और मुसीबत खड़ी होगी।

बरामदे की तरफ जाती है। रीता दायीं तरफ से चली

जाती है। अयूब उससे कुछ कहने को होता है, पर अपने को रोक लेता है। ब्रांडी की बोतल से एक घूंट भरकर वह लाउंज के बीचोंबीच आ जाता है। दो-एक मैगजीनें उठाता है और उन्हें वापस रख देता है। फिर पल-भर खिड़की की तरफ देखता रहता है।

अयूब : फिर वही उतरती हुई रात और वहीं आवाजें-झींगुरों, झिल्लियों और मेढकों की। वही एक आदम-सी दहशत, वही अकेलापन और वही अपने-आपसे सामना। (टेलीफोन के पास जाकर उसके रिसीवर को हल्के-से छेड़ता हुआ) क्या चाहता हूं? किसी से बात करना? पर किसी से बात करना ही तो नहीं चाहता? (टेलीफोन के पास से हटकर) तो क्या चाहता हूं? इस तरह यहां अकेले खड़े रहना? बाहर की तरफ देखते जाना? (सिर को हल्के-से झटका देकर) कुछ समझ में नहीं आता। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या चाहता हूं—खास तौर से जब रात उतरती है, ये आवाजें सुनाई देती हैं, तो क्यों इतना छटपटाने लगता हूं?

धीरे-धीरे आकर तिपाई पर बैठ जाता है।

परसों रात भी एक ऐसी ही छटपटाहट के बाद वह सब हुआ था। अब्बाजान और दूसरे लोगों को ख्याल होगा कि मैं अपने हिस्से के लिए लड़ रहा हूं, जमीन-जायदाद और रुपये-पैसे के लिए चखचख कर रहा हूं—मगर क्या मैं उनमें से किसी को भी समझा सकता था कि मैं उन सबसे अलग रहकर क्यों रहना चाहता हूं? ये परसों शाम को सुनी हुई आवाजें थीं—और परसों शाम को ही नहीं, उससे पहले हर शाम को सुनी हुई आवाजें—जिन्होंने यह सोचने के लिए मुझे मजबूर कर दिया था कि जो जिन्दगी मैं जी रहा हूं, वह मेरी अपनी जिन्दगी नहीं है—मैं चाहे जितने साल उसे ढोता रहूं फिर भी उसे अपना नहीं सकूंगा।

सोचता-सा तिपाही से उठकर टहलने लगता है। कहने को सब कुछ है—घर है, बीवी है, दो बच्चे हैं, फिर भी मैं चाहता हूं कि यह सारा ताना-बाना एक न चाहते मन के चारों तरफ बुना गया है, हालांकि बुनने वाले सिर्फ दूसरे

ही नहीं हैं, मैं भी हूं। बल्कि जब कभी ताना-बाना ढीला होता नजर आया, मैंने खुद उसमें और धागे बुने हैं, खुद अपने को उन धागों में और जकड़ लेना चाहा है, और इसी से मन की छटपटाहट और बढ़ती गई है।

टहलता हुआ केबिन की तरफ से होकर काउंटर के पास आ जाता है।

इस वक्त यहां मैं क्यों हूं? यहां से बाहर जाकर भी फिर लौट क्यों आया हूं? क्या सिर्फ इसीलिए नहीं कि? नहीं, इस बात का सामना मैं नहीं कर सकता। क्या सचमुच मैं इतना छोटा, इतना ओछा हूं कि मैंने...? पर असलियत क्या यही नहीं है? क्या सलमा को साथ ले आने का सीधा-सा मतलब एक बार डाक्टर की आंखों में आंखें डालकर देखने की चाह नहीं थी? क्या मैंने यह नहीं चाहा था कि एक बार मुस्कराकर डाक्टर से पूछ सकूं—'कहो डाक्टर, क्या हालचाल है?' मेरे यह पूछने का मतलब सिर्फ वही समझ सकता था या मैं। क्योंकि सलमा से शादी करने के बाद डाक्टर से यह मेरी पहली मुलाकात होती। डाक्टर अपनी बीवी सकीना को पाकर खुश नहीं हो सका...उसी तरह जैसे मैं सलमा से शादी करके। सिर्फ वह अपना खोल बनाए रखना चाहता है—शायद उसका ख्याल है कि उसका खोल किसी को नजर नहीं आएगा। पर किसका खोल किसे नजर नहीं आता? सब एक-दूसरे के खोल से वाकिफ हैं, एक-दूसरे का खोल उतरते देखना चाहते हैं—मगर अपना खोल बनाए रखते हुए। क्योंकि सिर्फ एक ही खोल है—अपना—जो कि लगता है किसी तरह निभाया जा सकता है—कुछ और दूर तक, फिर कुछ और दूर तक। और दूर तक। (ब्रांडी का एक और घूंट भरके हल्की-तुर्श-हंसी के साथ) और कल का वह हादसा! क्या समझा होगा इन लोगों ने कि कितना खबीस हूं मैं! राह चलते एक नावाकिफ लड़की का हाथ पकड़कर अपनी तरफ खींचना—इससे बड़ी हिमाकत क्या हो सकती थी? पर क्या सचमुच वह हादसा शराब के नशे में ही हुआ था जैसा कि ये लोग समझते हैं? क्या मैंने जानबूझकर ऐसा नहीं किया था जिससे कि दस आदमियों के बीच मुझे जलील होना पड़े? जिससे कि

इसकी खबर श्रीनगर पहुंचे और वे लोग जान जाएं कि वह खोल, वह भस्म, जिसे वे बनाए रखना चाहते हैं, मैंने तोड़ दिया है?

तभी टैरेस की ओर से आकर नीरा झांकती है।

रीता : गुड्डो दीदी! गुड्डो दीदी!...यहां भी नहीं हैं? उफ्...

अयूब : यह वही लड़की है जिसे गुड्डो खोज रही थी और यह गुड्डो को खोज रही है...(बरामदे की तरफ जाता हुआ) ओ लड़की...क्या नाम है तेरा...सुन, इधर आ।

नीरा एक बार घूमकर उसकी तरफ देखती है, और फिर टैरेस से उतरकर बायीं तरफ भाग जाती है।

ओ लड़की...किधर जा रही है तू? तुझसे कहा है इधर आ। सुन नहीं रही तू? ओ....क्या नाम है तेरा...सुन...

लॉन में से होकर वह भी बायीं तरफ से चला जाता है। कुछ क्षण मंच खाली रहता है। बादल की गरज के साथ हल्की वर्षा का शब्द सुनाई देने लगता है। बरामदे के पार अंधेरा गहरा होता चला जाता है। सहसा टेलीफोन की घण्टी बजने लगती है। कुछ क्षण बजने के बाद घण्टी बन्द हो जाती है। हवा के झोंके से तिपाई पर रखी पत्र-पत्रिकाएं फड़फड़ाती हैं। रीता दायीं तरफ से आती है।

रीता : कितनी फिजूल की कोशिश कर रहे हैं ये लोग—कि जैसे पत्थर रखने से अब भी किसी तरह टूटते पुल को संभाला जा सकता है। (अपनी खाली कलाई पर नजर डालकर) पता नहीं क्या बजा होगा।...बड़ी ममी को पता चलेगा कि उनकी घड़ी आज मुझसे खो गई है, तो आधी रात तक न वे सोएंगी, न किसी और को सोने देंगी। (कलाई को उंगली और अंगूठे की चूड़ी में लेकर) पर पता तो उन्हें तब चलेगा न जब...जब हम बाहर पहुंच सकें। लगता है उस आदमी की कही बात ही सच होने जा रही है—आज रातभर हम सबको शायद यहीं रहना पड़ेगा। (बाहर की तरफ देखकर) अंधेरा हो गया है, बारिश उतर आई है, और नीरा जाने अब तक बाहर कहां घूम रही है? (आसमान देखकर) पर वह आदमी...वह भी तो नजर नहीं आ रहा। कहीं ऐसा तो नहीं कि...नहीं, ऐसी बात मुझे सोचनी भी नहीं चाहिए। पर शायद उससे उतनी बात करना भी ठीक नहीं था। ऐसे आदमी का कुछ भरोसा है?

बड़ी ममी अक्सर कहा करती हैं कि भीड़ में आदमी आदमी होता है, और अकेले में...पर मैंने क्या हमेशा इस बात का मजाक नहीं उड़ाया है?

बिजली कौंधने से बरामदे के पार का हिस्सा बीच-बीच में पलभर के लिए चमक जाता है। वर्षा की आवाज पहले से तेज हो जाती है।

एक तो बारिश को भी बस इसी वक्त शुरू होना था। अब मैं चाहूं भी तो जाकर उसे देख नहीं सकती। और अंधेरे में क्या पता है...कल उस आदमी ने जो हरकत की थी; उसे नजर में रखते हुए...मुझे उस आदमी से बिलकुल बात ही नहीं करनी चाहिए थी।

कुछ कदम बरामदे की तरफ जाकर लौट आती है। तभी अब्दुल्ला बायीं तरफ से सलमा को साथ लिए हुए आता है। सलमा दरम्याने कद की महिला है। रंग गेहुंआ है। बड़ी-बड़ी आंखों के अलावा भी चेहरे का अपना आकर्षण है। हल्के रंग की साड़ी उसके शरीर पर बहुत फबती है। देखने में दुबली नहीं है, पर भारी भी नहीं कहा जा सकता। उम्र बाईस और तेईस के बीच है। चेहरे पर स्वाभाविक सौभ्यता के अलावा विषाद की भी हल्की छाया है। अब्दुल्ला उसका रेनकोट उठाए हुए है।

अब्दुल्ला : (आगे आकर रेनकोट सोफे की बांह पर रखता हुआ) यहां बैठिए...थोड़ी देर और आराम करने से तबियत ठीक हो जाएगी।

सलमा : मेरी तबियत अब पहले से काफी ठीक है।

कहती हुई हल्के कदमों से खिड़की की तरफ चली जाती है।

अब्दुल्ला : मैं कह रहा था कि आप कुछ देर यहां बैठ जातीं, तो...

सलमा : (खिड़की से बाहर देखती हुई) मैंने कहा है न, मैं ठीक हूं —अब बैठने की ऐसी ज़रूरत नहीं है।

अब्दुल्ला : खैर आपकी मर्जी है। वैसे बेहतर यही था कि...रीता इस बीच उसके पास आ जाती है।

रीता : देख, अभी-अभी वह एक आदमी यहां था न...?

अब्दुल्ला : मैं अभी-अभी बाहर से आ रहा हूं। कौन आदमी यहां था, कौन नहीं था, इसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता।

रीता : (तीखे स्वर में) वह आदमी नहीं था यहां, जिसकी वजह से कल...? (सलमा रीता को ताकती है)

अब्दुल्ला : जरा आहिस्ता बोलो, आहिस्ता। (दिल पर हाथ रखे हुए) तुम्हें पता नहीं मुझे दिल का दौरा पड़ता है।...तुम्हारा मतलब मिस्टर अयूब से है?

रीता : देख, वह लड़की है न नीरा?

अब्दुल्ला : तुम अयूब साहब की बात कर रही हो, या नीरा की बात कर रही हो?

रीता : मैं दोनों की बात कर रही हूं।

अब्दुल्ला : दोनों की? तो तुम्हारा मतलब है कि...

रीता : तू बात सुन तो सही। मैं उधर गई थी..मेरी घड़ी नहीं मिल रही थी, इस वजह से भी परेशान थी...

अब्दुल्ला : अब तुम उन दोनों की बात छोड़कर अपनी बात करने लगीं।

रीता : (फिर तीखे स्वर में) तू बात सुनेगा भी या खामखाह टोकता ही जाएगा।

अब्दुल्ला : आहिस्ता। आहिस्ता। हां, बताओ क्या बात है।

रीता : नीरा उधर आई, तो मैं परेशान थी। वह इधर से झल्लाई हुई गई थी—शायद तूने ही उससे कोई बात कह दी थी। वहां आते ही मुझसे पूछने लगी कि क्या वह देखने में बच्चा नजर आती है? मैंने उसे जवाब नहीं दिया, तो अपने को मुझे दिखाकर और मेरा कन्धा झिंझोड़कर पूछने लगी कि क्या मैं भी उसे बच्चा समझती हूं? मैंने गुस्से में इतना कहा कि यह बात भी, जो वह पूछ रही है, यह बच्चों की सी नहीं है? और कि अभी चौदह की तो वह हुई नहीं, फिर अभी से उसे अपने को बड़ी समझने का शौक क्यों चर्रा आया है इस पर वह एकाएक बिगड़ खड़ी हुई, और गुस्से से पांव पटकती वहां से चली गई। मेरा ख्याल था कि वह इधर आई होगी, पर इधर आकर पता चला कि वह इधर नहीं आई।

अब्दुल्ला : पता किससे चला? मिस्टर अयूब से?

रीता : हां, उसी से। वह आदमी उस वक्त यहां पर था। मैंने उसे इतना बताया था कि वह लड़की जिद में आकर जाने किस तरफ निकल गई है।

अब्दुल्ला : फिर?

रीता : फिर क्या? फिर मैं थोड़ी देर के लिए बाहर आ गई थी। लौटकर आई हूं, तो न उस लड़की का पता है, और न ही वह आदमी यहां पर है। ऊपर से बारिश उतर आई है। अब एक तो मुझे डर है कि इस आधे मील के टापू में वह लड़की जाने इस वक्त कहां भटक रही होगी, और दूसरे

वह आदमी...

अब्दुल्ला : हूं...तो इस वक्त तुम मुझसे क्या चाहती हो?

रीता : क्या चाहती हूं? क्या तुम खुद नहीं समझते कि हममें से किसी को जाकर उन्हें देखना चाहिए?

अब्दुल्ला : हममें से किसी को?...तुम्हारा मतलब है कि मुझे जाकर देखना चाहिए?

रीता : अगर तुम नहीं जा सकते, तो यह रेनकोट मुझे दे दो। मैं चली जाती हूं।

अब्दुल्ला : मैंने कहा है मैं नहीं जा सकता? अब तो मेरे पास फुरसत ही फुरसत है। जब तक पुल ठीक नहीं होता, तब तक सिवाय फुरसत के और रह ही क्या गया है?

काउंटर के अन्दर से होकर स्टोर से जाने लगता है।

रीता : ये लोग क्या करने की सोच रहे हैं? पुल बिल्कुल टूट गया है, तो उसकी जगह नया पुल बनने में तो कई दिन, कई हफ्ते लग जाएंगे।

टेलीफोन के पास जाकर रिसीवर उठा लेती है।

हलो एक्सचेंज...हलो, हलो, हलो...(कमानी को कई बार खटखटाकर) हलो, हलो, हलो...

बाहर से पानी में किसी चीज के गिरने की आवाज सुनाई देती है।

यह कुछ और टूटा है क्या?

सलमा : (बिना मुड़कर उसकी तरफ देखे) टूटा कुछ नहीं, नियामत ने किनारे का एक बड़ा-सा पतथर शायद पानी में लुढ़का दिया होगा।

रीता : (टेलीफोन की कमानी को लगातार खटखटाती हुई) हलो एक्सचेंज... हलो, हलो...। टेलीफोन बिल्कुल बेजान है। मेरा ख्याल है इसकी लाइन कट गई है। (फिर उसी तरह खटखटाती हुई) हलो,...हलो, हलो एक्सचेंज...

वत्तियां दो-एक बार जल्दी-जल्दी झिल-मिलाकर एकाएक गुल हो जाती हैं। अंधेरे में सिर्फ रीता की आवाज सुनाई देती रहती है :

हलो एक्सचेंज...हलो, हलो, हलो...

परदा

अनुवर्तन दो

मंच में कोई परिवर्तन नहीं है, सिवाय इसके कि बिजली की बत्तियां गुल होने से चार-छः जगह बड़ी-बड़ी मोमबत्तियां जला दी गई हैं। अंगीठी में लकड़ियां सुलग रही हैं। उनकी आंच से भी हल्की रोशनी है। पुल टूट चुका है। तेज बारिश हो रही है। पर्दा उठता है तो अयूब और उसकी पत्नी सलमा ही नजर आते हैं। पण्डित और नीरा कहीं बाहर हैं। अब्दुल्ला और नियामत भी बाहर हैं। तेज बहते पानी और चलती तेज हवा का स्वर। अयूब और सलमा फायर प्लेस के पास गुमसुम बैठे हैं। पीछे से अब्दुल्ला और नियामत की आवाजें आ रही हैं।

अब्दुल्ला : नियामत हो! इधर पानी आ गया है...

नियामत : इधर सब टूट रहा है हो...संभल के ऊपर निकल जाओ...

अब्दुल्ला : हां हो...

अयूब : मैं समझता हूं, हम यहां बिल्कुल अकेले हैं...क्यों?

सलमा : जब मुसीबत आती है तो सब अकेले ही होते हैं...मुसीबत की शक्लें अलग-अलग हो सकती हैं। छुटकारा इतना आसान तो नहीं है।

अयूब : तुम्हें इस बात का अफसोस है कि मैंने वक्त से तुम्हारा हाथ खींचकर पीछे क्यों हटा लिया...खुद छुटकारा चाहते हुए तुम्हें क्यों बचा लिया?

सलमा चुप रहती है। वह उठकर बाहर की ओर चल देती है।

(उसका हाथ पकड़कर) कहां जा रही हो?

सलमा : जहां सचमुच अकेली रह सकूं।

अयूब : आदमी कभी कहीं भी अकेला नहीं हो पाता।

सलमा : मुझे अपने चारों तरफ अंधेरे का ऐसा गार चाहिए जिसमें...

अयूब : अंधेरे में क्या चेहरे नहीं होते?

सलमा : कैसे चेहरे?

अयूब : आज के चेहरे, कल के चेहरे...बरसों पहले देखे और भीगे

हुए चेहरे और कभी न देखे हुए चेहरे...

सलमा : तुम कहना क्या चाहते हो?

अयूब : यही कि चेहरों से बचना आसान नहीं है। मन में जो ख्याल आते हैं, उन ख्यालों के भी चेहरे होते हैं।

सलमा : मुझे तुम हमेशा चेहरों को लेकर शर्मिन्दा कर सकते हो... खुद भी अगर शर्मिन्दा हो सकते तो शायद हम एक-दूसरे के चेहरों को ज्यादा पहचान पाते...तुमने कल यहां उस लड़की रीता के साथ जो कुछ करने की कोशिश की...वह भी तो एक चेहरा है उसके लिए भी तुम शर्मिन्दा नहीं हो सकते...

अयूब : सिर्फ इसलिए शर्मिन्दा महसूस करूं कि कल जो कुछ हुआ या किया वह औरों के सामने हुआ। क्यों? औरों के सामने न हुआ होता तो तुम्हें तकलीफ न होती...

सलमा : मुझे नहीं मालूम...

बाहर की ओर जाती है।

अयूब : (चीखकर) तुम्हें मालूम होना चाहिए...

सलमा : (कमरे में पण्डित और झुनझुनवाला को देखकर लौट आती है) तुम धीमे नहीं बोल सकते। यहां वो लोग भी हैं।

अयूब : लोग...लोग...लोग। मैं तुमसे बात कर रहा हूं...लोगों से नहीं।

सलमा : लेकिन और लोग भी सुन रहे हैं...

अयूब : सुन भी लें तो क्या होगा? पुल टूट चुका है...बाढ़ का पानी बढ़ता जा रहा है...यह जगह कभी भी डूब सकती है और हम सब मौत के मुंह में किसी भी पल समा सकते हैं... उसके बाद कौन-सी बात कोई कहीं लेकर जा सकेगा... सब बातें होकर भी यहीं खत्म हो जाएंगी...

पण्डित और झुनझुनवाला आते हैं। पण्डित के हाथ में ताश की गड्डी है। झुनझुनवाला हिसाब का कागज देख रहा है। एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आती है।

पण्डित : (सलमा से) आप हमें देखकर डर गई थीं?

सलमा : नहीं तो...पुल टूटने के वक्त आप वहीं पर थे?

झुनझुनवाला : हां...खुशकिस्मती से हम बच गए।

पण्डित : कितनी देर के लिए? (गड्डी फेंकता है) जो वक्त बचा है उसमें दो हाथ और हो जाएं...(बैठ जाता है) आओ...

सब बैठ जाते हैं। बाढ़ की आवाज, शहतीरें टूटने और बहने की आवाज, कुत्ते के भौंकने की आवाज, कुछ क्षणों की भयानक खामोशी।

सलमा	:	(भय के बाद कुछ आवश्स्त होकर) आप लोग ताश नहीं खेल रहे...खेलिए।
झुनझुनवाला	:	नहीं...हम लोग ताश नहीं खेल रहे हैं।
		एक क्षण की खामोशी।
पण्डित	:	(सलमा-अयूब को देखकर) आप लोग बात नहीं कर रहे, कीजिए...
अयूब	:	नहीं, हम लोग बात नहीं कर रहे।
पण्डित	:	तो?
सलमा	:	कुछ न करने के लिए भी तो आदमी को जगह और वक्त चाहिए।
झुनझुनवाला	:	पर जगह बची कहां है? एनेक्सी आधी डूब चुकी है...सब जगह पानी भर चुका है...
सलमा	:	जगह न हो...पर वक्त तो है।
अयूब	:	कितना?
पण्डित	:	देखता हूं (झुनझुनवाला से) आओ, देख आएं।
झुनझुनवाला	:	क्या? (चलते हुए)
पण्डित	:	वक्त! कितना वक्त है।
		उसे पकड़कर खींच ले जाता है। तभी रीता और नीरा आती हैं। दोनों बहस करती चली आ रही हैं।
नीरा	:	मैं कहती हूं...धार में जो बहा जा रहा था वह पुतला था।
रीता	:	आदमी था।
नीरा	:	पुतला था। आदमी था, तो उसकी चमड़ी का रंग आदमियों जैसा क्यों नहीं था?
रीता	:	आदमी था। पुतला था, तो उसके हाथ-पैर आदमियों जैसे क्यों थे?
अयूब	:	आदमी और पुतला! झगड़ा क्या है? आदमी और पुतले में फर्क क्या होता है?
रीता	:	आदमी और जानवर में क्या फर्क होता है?
सलमा	:	आदमी के लिए जानवर और औरत में क्या फर्क होता है?
		अब्दुल्ला और नियामत भागते हुए आते हैं। दूसरी ओर से पण्डित और झुनझुनवाला आते हैं।
अब्दुल्ला	:	(घबराया हुआ) अब कोई रास्ता नहीं है। या खुदा!
पण्डित	:	क्या कहा...
नियामत	:	पानी चारों तरफ से घेरकर बढ़ रहा है...
झुनझुनवाला	:	इधर पीछे से कोई रास्ता...
नियामत	:	कहां का?
पण्डित	:	जहन्नुम का। ये जिन्दगी से भागने और जिन्दगी में घुसने के लिए हमेशा पीछे का रास्ता ही खोजता रहा...
झुनझुनवाला	:	बकवास मत करो...
अब्दुल्ला	:	(टेलीफोन बार-बार मिलाता है और रख देता है) हिश्...

(फिर मिलाता है। सब चुप हो जाते हैं, फिर रख देता है) या खुदा! मैं क्या कर सकता हूं, जो होना होगा, होगा। (फिर टेलीफोन का नम्बर मिलाकर हताश भाव से बोलता है) या खुदा...

नियामत : खुदा को टेलीफोन कर रहा है।

अब्दुल्ला : या खुदा...(टेलीफोन का रिसीवर उसके हाथ में झूल जाता है)।

पण्डित : खुदा से बात करनी है तो झुनझुनवाला को करने दे...ये खुदा के यहां भी पीछे के दरवाजे से घुसने की तैयारी बहुत दिनों से कर रहा है।

अब्दुल्ला : हिश्...

तभी एनेक्सी टूटने की भयानक आवाज... और रोते हुए भागते कुत्ते की आवाज। रोते भागते कुत्ते की आवाज तेजी से आती है और एकाएक खत्म हो जाती है। सब पीछे की ओर जाकर बढ़ते पानी को देखते हैं।

झुनझुनवाला : एनेक्सी टूट रही है।

अयूब : हां, लगता तो यही है।

सलमा : कुछ किया नहीं जा सकता, उसे बचाने को?

झुनझुनवाला : एनेक्सी को?

पण्डित : नहीं, कुत्ते को!

सलमा : जब जमीन ही नहीं बचेगी, तो कुत्ते का बचाव कैसे होगा!

नीरा : बेचारा कैसा छटपटा रहा है।

सलमा : कुछ देर में यही हश्र यहां होने वाला है।

झुनझुनवाला : यहां भी।

पण्डित : हां, यहां आठ-आठ कुत्ते इसी तरह छटपटाएंगे...

झुनझुनवाला : यहां...कुत्ते...

रीता : हां, हम सब लोग। चल नीरा...मरना है तो हम अपनी तरह मरेंगे...

नीरा को लिए हुए टेबिल-टेनिस वाले कमरे में चली जाती है।

पण्डित : कुत्ते...मैं, तू...वह...

अयूब की तरफ इशारा करता है।

अब्दुल्ला : (जैसे अपने में डूबा हुआ है) मैंने शफी साहब से छुट्टी मांगी थी...नहीं दी जालिम ने।

नियामत : अब फोन पर मांग ले, मिल जाएगी।

अब्दुल्ला : मैं एक बार...सिर्फ एक बार अपने लड़के का मुंह तो देख लेता। फिर चाहे जो हो जाता...

नियामत : यहां का हिसाब तब कौन देखता! अब लड़के की बात

मत सोच। रसद की फिक्र कर। यहां खुराक कितनी है?

अयूब : हां, कुछ है यहां? आखिर रात तो काटनी ही है....सलमा चुपचाप किचिन की तरफ चली जाती है।

पण्डित : और मरना भी है तो खा-पीकर मरना है...झुनझुनवाला तो भूखा मर भी नहीं पाएगा। है कुछ खाने-पीने का सामान...

अब्दुल्ला : पीने का सामान बहुत है। पर खाने का...दो वक्त का चावल, एक वक्त की गंदुम। गोश्त सारा सड़ गया है। मैंने शफी साहब से कहा था..

अयूब बाहर की ओर देखने चला जाता है।

नियामत : दो वक्त का चावल, एक वक्त की गंदुम...पर जब तक शफी साहब का हुक्म न मिले...

पण्डित : खैर, सब ठीक हो जाएगा...

झुनझुनवाला : खाक ठीक हो जाएगा...

पण्डित : नम्बर ट्राई करो...

अब्दुल्ला : नम्बर नहीं मिल रहा है।

पण्डित : (नम्बर ट्राई करके) घंटी बज रही है।

सब लोगों में हलचल।

नीरा : घंटी बज रही है...मुझे ममी से कहलाना है कि मैं यहां चली आई थी...वे फिकर कर रही होंगी।

झुनझुनवाला : टूरिस्ट अफसर से कहो, बचाने का इन्तजाम नहीं किया जाए...

नियामत : यह भी कह दीजिए कि दरवाजे तो हमने सब बन्द कर लिए थे पर निकलने से पहले पुल टूट गया है...अब हम क्या करें।

अब्दुल्ला : शफी साहब मिल जाएं तो कह दीजिए...

पण्डित : (काटकर) कोई उठा नहीं रहा।

झुनझुनवाला : फिर से डायल करो...

पण्डित : नहीं, घंटी बज रही है...शायद कोई उठा ही ले। खामोश... ठीक से सुनने दो...

अयूब : (खामोशी देखकर) ये काठ क्यों मार गया है सबको!

पण्डित : श् श्...श् श्...घंटी बज रही है।

अयूब हंसता है।

श् श् यह हंसने का वक्त नहीं है।

अयूब : हंसने का वक्त नहीं है! बाहर देखा है क्या हो रहा है?

झुनझुनवाला : लोग दूरबीन लिए इधर देख रहे हैं। हाथ हिला रहे हैं...

अब्दुल्ला : जैसे हम लम्बे सफर पर जा रहे हों।

झुनझुनवाला : कौन-कौन लोग हैं?

अयूब : कौन-कौन है और कौन नहीं है, इसका कुछ पता चल

सकता है, यहां से?

पण्डित : श् श् श् श्!

झुनझुनवाला : उधर से उठाया किसी ने?

पण्डित : नहीं, अभी घंटी बज रही है...

नियामत : सिर्फ घंटी ही बजती रहेगी।

अयूब : हां, सुनने वाले इस वक्त दुरबीनों से देख रहे हैं...हाथ हिला रहे हैं।

झुनझुनवाला : उन्हें रस्से फेंकने चाहिए।

अयूब : रस्सा पकड़कर दरिया कौन-कौन लांघेगा?

पण्डित : श् श् श् श्...

झुनझुनवाला : रस्सा इतने लोगों का बोझ एकसाथ संभाल पाएगा?

अयूब : हम कितने लोग हैं?

अब्दुल्ला : एक दो तीन चार...पाँच...

नियामत : और बाकी लोग कहां हैं? बेगम और वो लड़कियां...

झुनझुनवाला : उन्हें छोड़ो।

पण्डित : श् श्...श् श्...हलो। उधर से किसी ने उठाया है रिसीवर... हलो...(सब टेलीफोन को घेर लेते हैं। सब टेलीफोन के रिसीवर में चीखते हैं—हलो...हलो...हलो।)

पण्डित : (रिसीवर लेकर) हल्लो। हूं...टेलीफोन डेड हो गया है।

झुनझुनवाला : डेड! (हाथ में लेकर सुनता है और कमानी पर पटक देता है।)

अब्दुल्ला : या खुदा! अब क्या होगा!

नियामत : खुदा छुट्टी देगा। (रिसीवर उठाकर अब्दुल्ला की ओर बढ़ाते हुए) ले, खुदा को फोन कर!

पानी की तेज आवाज, एनेक्सी के एक और हिस्से के टूटने की आवाज, सब सहमे खड़े रह जाते हैं।

अब्दुल्ला : मौत बहुत नज़दीक है। अब...(हिसाब की कापी खोजता है)

कापी कहां है?

कापी उठाता है।

नियामत : हिसाब देकर मरेगा?

अब्दुल्ला : (घबराकर) क्या पता पानी कहां तक आ गया है!

झुनझुनवाला : लगता है, यहां तक बढ़ आया है। (इशारा करता है।)

पण्डित : आओ, चलकर देख तो लें, हमें कितने पानी में मरना है। आओ...

झुनझुनवाला पीछे जाता है।

अयूब : देखें कहां तक आ गया है, आओ...

अब्दुल्ला और नियामत भी पीछे जाते हैं। सलपा हाथ में खाने की खाली प्लेटें लिए आती है।

सलमा : अरे सब कहां हैं? कोई प्लेटें तो लगा लो...

इधर-उधर देखकर चली जाती है, प्लेटें रख जाती है।

पण्डित और झुनझुनवाला लड़ते-झगड़ते आते हैं।

झुनझुनवाला : अब पानी का रुकना और इस इमारत का बचना मुश्किल है।

पण्डित : तो मैं क्या करूं?

नियामत : (एकदम आकर, बेहद घबराए स्वर में) चलकर पत्थरों की बाड़ बनाइए...पानी को रोकने की कोशिश कीजिए।

पण्डित : यह सब बेकार बात है। जो पानी नीचे से जमीन को काट रहा है, क्या पत्थरों के रोके से रुकेगा?

झुनझुनवाला : तुम इसका हौंसला पस्त क्यों कर रहे हो? तुम्हें पत्थर नहीं रखने हैं तो तुम चले क्यों नहीं जाते?

पण्डित : कहां? जाने की जगह कहां है?

अब्दुल्ला : (आकर) आइए, हाथ बटाइए। जल्दी आइए...

पण्डित : ठीक है। चले चलते हैं। पर वो बेगम साहिबा, वे दोनों लड़कियां और अयूब साहब कहां हैं?

नियामत : दोनों लड़कियां और बेगम खाना बना रही हैं।

पण्डित : ठीक। बहुत ठीक। पानी को रोकेंगे, नम्बर एक। नम्बर दो—खाना खाएंगे और नम्बर तीन—कुत्तों की तरह मर जाएंगे।

झुनझुनवाला : 'सवाल फलसफा' बघारने का नहीं, सवाल जिन्दगी और मौत का है।

पण्डित : सवाल जिन्दगी और मौत का भी नहीं, मौत और उसकी टाइमिंग का है।

झुनझुनवाला : (चीखकर) ये मौत की बात बन्द करो, नहीं तो मैं तुम्हारी जान ले लूंगा।

पण्डित : (हंसकर) देख और सोच लो दोस्त, हम दोनों में से मौत के ज्यादा नज़दीक कौन है।

झुनझुनवाला : (पण्डित पर झपटकर गला पकड़ते हुए) मैं अभी तुम्हें बताता हूं, ज्यादा नज़दीक कौन है।

अब्दुल्ला : अरे रे रे...आप लोग यह क्या कर रहे हैं?

नीरा एक प्लेट में डबलरोटी के स्लाइस लेकर आती है, पण्डित और झुनझुनवाला को इस हाल में देखकर चीखती, भागती है।

नीरा : दीदी...दीदी...देखो...दीदी।

पण्डित और झुनझुनवाला, गुस्से में हांफते हुए एक-दूसरे के सामने खड़े हैं, नियामत उन्हें अलग कर देता है।

नियामत : (दोनों की बांहें पकड़कर) आप आइए हमारे साथ...पानी अगर ऊपर तक आ गया तो कोई नहीं बचेगा...(अब्दुल्ला से) तू क्या सोच रहा है? आ!

नियामत दोनों को साथ लिए चला जाता है। पीछे-पीछे अब्दुल्ला भी जाता है। तभी किचिन के पास वाले दरवाले से अयूब आता है। बार के पास आकर खाली शीशी मारकर बार का ताला तोड़ता है। उसमें से एक बोतल शराब निकालता है और सील तोड़कर घूंट भरता हुआ उसी ओर चला जाता है जिधर से आया था। उसके पास जाते ही नीरा कुछ खाने का सामान लेकर आती है, मेज पर लगाती है। सलमा भी आती है, वह कुछ और खाने का सामान लिए हुए है।

नीरा : दीदी तो यहां भी नहीं हैं। कहां चली गईं?

सलमा : (सामान रखते हुए) उन लोगों का हाथ बंटा रही होगी? (इशारा उस तरफ है जहां अब्दुल्ला वगैरह पत्थर रखने गए हैं) तुम खाने के लिए बुला लो सबको...मैं तब तक सालन ले आऊं...

जाती है।

नीरा : बुलाने कौन जाएगा...हूं...

किचिन में चली जाती है। तभी लस्तपस्त भीगा हुआ झुनझुनवाला आता है। पीछे-पीछे पण्डित हांफता हुआ।

झुनझुनवाला : मेरी बांहें जवाब दे गई हैं...मुझसे पत्थर नहीं उठाए जा सकते।

पण्डित : मौत उठा पाओगे?

झुनझुनवाला : मैं कहता हूं बकबास बन्द करो। मौत...मौत...।

तभी अब्दुल्ला और नियामत भीगे हुए आते हैं।

अब्दुल्ला : आप लोग यहां आ गए? इसका मतलब है बचाव का इंतजाम करना छोड़ दिया जाए!

झुनझुनवाला : कोई और रास्ता सोचो अब्दुल्ला।

अब्दुल्ला : कोई और रास्ता...और. क्या रास्ता हो सकता है?

पण्डित : एक रास्ता हवा में है...(झुनझुनवाला की ओर इशारा करके) इसे मालूम है। इससे पूछो...जिन्दगी-भर गलत काम करके यह हवा में से रास्ता निकालकर आज तक बचता रहा है...

झुनझुनवाला : पण्डित!

झुनझुनवाला का चीखना सुनकर किचिन से आती सलमा और नीरा ठिठक जाती हैं। ठिठककर आगे बढ़ती हैं।

सलमा : (सालन रखकर एक क्षण सबको देखती है) आप लोग खाना खा लीजिए...

नियामत : (अब्दुल्ला से) चल, तब तक कोने पर दो-चार पत्थर और डाल दें...

अब्दुल्ला और नियामत चले जाते हैं।

नीरा : (पण्डित और झुनझुनवाला से) रीता दीदी कहां हैं? आप लोगों के साथ नहीं थीं?

पण्डित : अयूब साहब कहां हैं? तुम लोगों के साथ नहीं थे...

सलमा : आप लोग खाना खाइए। जो कहीं हैं वे भी आ जाएंगे अभी। (पण्डित की ओर तश्तरी बढ़ाती है) लीजिए...

पण्डित : मुझे भूख नहीं है।

सलमा : सचमुच नहीं है!

पण्डित : (प्लेट झपट लेता है) है भूख! है भूख! भूख ही भूख है! सिर्फ भूख...

प्लेट से बेतहाशा खाना शुरू करता है। तभी, रीता किचिन के पास वाले दरवाजे से हांफती, कुछ लड़खड़ाती और बेहाल-सी आती है। उसकी कमीज छाती पर फटी हुई है, बटन टूटा हुआ है। वह आकर एक कुर्सी पर बेहाल बैठ जाती है। कोई कुछ नहीं कहता, सिर्फ उसे सब लोग ताकते रह जाते हैं। सलमा चुपचाप एक क्षण उसे देखती है। फिर प्लेट में खाना डालकर देती है। रीता पागलों की तरह खाने को, फिर सबको देखती है। फिर प्लेट को देखती है।

पण्डित : (उसकी तश्तरी की तरफ इशारा करके) भूख!...खाओ खाओ...भूख...

रीता : हां...(हंसती है, और हंसते-हंसते रो पड़ती है) हां...हां... हां...

नीरा : (अवाक्) दीदी...रीता दीदी!

सलमा : (रीता को संभालकर) यहां आओ...मेरे साथ आओ...रीता को उठाकर किचिन में ले जाती है। नीरा पीछे-पीछे चली जाती है।

पण्डित : (एकटक उन्हें जाता देखता रहता है। फिर झुनझुनवाला से) देखा!

अयूब : (शराब के नशे में धुत्त) हां देखा...और देखूंगा...

झुनझुनवाला : क्या?
अयूब : औरतें।
झुनझुनवाला : कहां है?
अयूब : उधर...

बाहर की ओर इशारा करता है।

झुनझुनवाला : उधर कहां?
अयूब : उदर...मुझे एक औरत चाहिए। औरत...जो मौत के खतरे के बावजूद मेरा...साथ दे सके। समझे। नहीं समझे...कोई बात नहीं...

कहता हुआ बाहर की ओर लुढ़कता चला जाता है। पण्डित हाथ पोंछता हुआ उठता है।

पण्डित : वो आदमी ठीक कहता है।
झुनझुनवाला : क्या ठीक कहता है?
पण्डित : ऐसी औरत चाहिए जो मौत के खतरे के बावजूद साथ दे सके।

बार का टूटा हुआ ताला देखता है।

झुनझुनवाला : ऐसी औरत होती है...
पण्डित : होती है!
झुनझुनवाला : कहां देखी है?
पण्डित : अपने घर में! मेरी औरत...
झुनझुनवाला : क्या मतलब?
पण्डित : मेरी औरत! मेरी बीवी। जो मौत के खतरे के बावजूद तेरा साथ दे सकती है।
झुनझुनवाला : (इधर-उधर देखकर) क्या बक रहा है तू!
पण्डित : तुझे मेरी बीवी की नहीं, इस वक्त भी अपनी इज्ज्त का ख्याल है...
झुनझुनवाला : यह इल्जाम है!
पण्डित : तुझ पर नहीं...खुद अपने पर। ओह...यह जिंदगी...(बार के पास आकर ब्रांडी की बोतल निकालता है) पियोगे। (खुद रक घूंट पीता है) यह इल्जात है खुद अपने पर...

पण्डित कहता हुआ बाहर चला जाता है। झुनझुनवाला अवाक् देखता रहता है। फिर पण्डित के पीछे चला जाता है। तभी अब्दुल्ला और नियामत आते हैं। हाथ झाड़ते, हांफते। अब्दुल्ला बार का ताला टूटा हुआ देखता है।

अब्दुल्ला : या खुदा...ये ताला...और बोतलें...
नियामत : बोतलें। एक बोतल तो पण्डित के हाथ में थी।
अब्दुल्ला : तो ताला उसी ने तोड़ा होगा...
नियामत : मैं उधर गया था, एक बोतल अयूब साहब के हाथ में थी।

अब्दुल्ला : तो उन्होंने तोड़ा होगा।

नियामत : और गुड्डो भी मुझे लगता है कि...

अब्दुल्ला : कोई भी पिये मेरी बला से, पर हिसाब के ये पैसे कहां से आएंगे?

नियामत : पैसे वसूल करना तेरा काम नहीं, तेरा काम है कापी में हिसाब लिखना।

अब्दुल्ला कापी निकाल लेता है।

लिख, दो बोतल!

अब्दुल्ला : सब एक ही के नाम?

नियामत : एक ही के नाम।

अब्दुल्ला : किसके नाम?

नियामत : खुदाई कहर के नाम!

अब्दुल्ला : खुदाई...नहीं, नहीं...इस कहर से कौन पैसे वसूल कर सकता है?

नियामत : बार का मालिक, तेरा शफी साहब। जो हरेक से पैसे वसूल कर सकता है।

अब्दुल्ला : तुझे हंसी सूझ रही है?

नियामत : मैं हंसी नहीं कर रहा। बल्कि दो की जगह तीन बोतल लिख...

अब्दुल्ला : तो एक बोतल और भी...

नियामत : एक बोतल खुद खोल ले। आधी तेरे लिए; आधी मेरे लिए।

अब्दुल्ला : हंसी छोड़...(कुछ सामने देखते हुए) इस वक्त मैं एक चेहरे को अपनी आंखों से ओझल कर लेना चाहता हूं।

नियामत : कौन-से चेहरे को?

अब्दुल्ला : वो जो मुझे सामने नजर आ रहा है।

नियामत : मेरे चेहरे को?

अब्दुल्ला : नहीं, एक बूढ़े चेहरे को...जो उस पार की भीड़ में कहीं खोया हुआ है।

नियामत : यहां से तो कोई चेहरा नजर नहीं आता...

मुड़कर बाहर की ओर देखता है।

अब्दुल्ला : सिर्फ वह चेहरा नजर आता है। वो मेरी मां के बूढ़े चेहरे जैसा है।

नियामत : असल में वह चेहरा मौत का चेहरा है।

अब्दुल्ला : (गुस्से से) तू चला जा यहां से...मैं इस वक्त मौत का जिक्र नहीं सुनना चाहता...एक बार अपने लड़के का चेहरा देखे बगैर मैं हरगिज नहीं मर सकता, हरगिज नहीं...

नियामत : बाहर निकलकर उस पार की भीड़ पर नजर डाल। वह चेहरा भी तुझे उस भीड़ में ही कहीं नजर आ जाएगा...

आ, मैं दिखाऊं तुझे।

कहते-कहते नियामत बाहर निकल जाता है।

अब्दुल्ला : ओ खुदा...तेरा कोई नजर आने वाला चेहरा क्यों नहीं है? (वह भी नियामत के पीछे-पीछे चला जाता है) ओह खुदा...

रीता थकी और वदहवास-सी आती है। पीछे-पीछे नीरा है। नेपथ्य में अब्दुल्ला की अजान की आवाज सुनाई दे रही है। रीता और नीरा करीब-करीब झगड़ती हुई आ रही हैं।

नीरा : तुम कुछ बातें नहीं करतीं दीदी? तुम्हें हुआ क्या है?

अजान की आवाज आती है।

रीता : हट जा...तू भी चली जा यहां से...मुझे अकेला रहने दे...

नीरा : कहां चली जाऊं, किसके पास...

सुबकती-सी है।

रीता : कहीं भी, किसी के पास...(नीरा चलने लगती है) अच्छा मत जा, यहीं बैठ, मेरे पास...(नीरा बैठ जाती है) मैं तुझे यहां जानवरों के बीच अकेला नहीं छोड़ सकती...

नीरा : यहां जानवर भी हैं?

रीता : हां, ये सब जानवर ही हैं।

नीरा : सब जानवर...

रीता : हां, एक को मैंने जान से मार दिया होता, क्योंकि उसने... क्योंकि उसने कोशिश की थी...मुझे...

नीरा : नहीं-नहीं, तुम किसी को जान से नहीं मार सकतीं...तुम तो...

रीता : नहीं मार सकी मैं उसे क्योंकि...मेरे हाथ दहशत से कमजोर पड़ गए थे...

नीरा : दहशत से...

रीता : ओह! दहशत मुझे उससे नहीं थी। एक और जानवर से थी जो मेरे अपने अन्दर से..ओह!

नीरा : तुम क्या कह रही हो दीदी...

रीता : (अपने में डूबी हुई) मैं उसे अपने से परे हटा रही थी और वह जानवर उसे अपने पास बुलाना चाह रहा था। वह चाह रहा था कि मरने से पहले एक बार...चाहे...कुछ भी हो...सिर्फ एक बार...

नीरा : तुम किन जानवरों की बात कर रही हो दीदी?

रीता : अच्छा है, उन जानवरों की बात तू अभी नहीं जानती। शायद तू अब कभी जान भी नहीं पाएगी, क्योंकि थोड़ी देर में अब...

नीरा : थोड़ी देर में अब...थोड़ी देर में क्या होने वाला है?

रीता : तू इतना भी नहीं सोच सकती कि क्या होने वाला है? अच्छा ही है, अगर सोच न सके...तेरा यह भोलापन ही सबसे बड़ी ताक़त है तेरी...

नीरा : मेरी समझ में कुछ नहीं आता दीदी...चलो, चलकर म्यूजिक सुनेंगे...रिकार्ड लगाएंगे अपनी पसंद के...

अजान की आवाज फिर आती है।

यह अब्दुल्ला चुप क्यों नहीं करता? चीखता ही चला जा रहा है।

रीता : वो अपनी इस आवाज के सैलाब में अपने अन्दर की किसी चीज को डुबो लेना चाहता है, शायद...

नीरा : मुझे यह आवाज बहुत डरावनी लग रही है...चलो दीदी, लाउंज में चलें...रिकार्ड सुनेंगे...

तभी अयूब और सलमा आते हैं। अयूब पी रहा है बोतल से ही। सलमा उसे पकड़ने की कोशिश करती पीछे आती है।

अयूब : कहां है...कहां है वह छोटी लड़की!

सलमा : (उसे पकड़ लेती है) होश में आओ...मैं कहती हूं होश में आओ...

रीता और नीरा भय से एक ओर दुबक जाती हैं।

अयूब : मैं होश में हूं सलमा...बिलकुल होश में...दरिया में बह जाने से पहले एक बार...पानी यहां तक (गले तक) बढ़ आने से पहले एक बार मैं उसके भोलेपन के साथ... उसकी इन्नोसेंस के साथ...

सलमा : तुम उसकी तरफ देख भी नहीं सकते।

अयूब : क्यों?

रीता : (एकदम आगे आकर) इसलिए कि वह अकेली नहीं है।

सलमा : और तुम जो चाहते हो, वह नहीं कर सकते।

अयूब : (सलमा से) अब सुनाई दी तुम्हें अपने अन्दर से कुछ आवाज...अपने कब्रिस्तान में कोई मुरदा तुम्हें अचानक जागता लगा?

सलमा : मैं सोचती भी नहीं थी कि तुम इतने नाकारा हो सकते हो...अगर तुमने कुछ भी कोशिश की तो...मैं उसे...हम दोनों (रीता को आगे खींच लेती है) उसे बचाने के लिए...

अयूब : मैं उसे...हम दोनों उसे...आज पहली बार तुम्हारे मुंह से सुना है कि तुम किसी के साथ...किसी के साथ एक होकर अपने बारे में सोच सकती हो।

सलमा : मुझे तुम्हारी दलीलबाजी से नफरत है!

रीता : मुझे तुम्हारे इन इरादों से नफरत है...

अयूब : नफरत, तुम्हें...तुम्हारा मेरा कोई रिश्ता नहीं...सिवा उन अधूरे लमहों के...और नफरत का सवाल बिना रिश्तों के नहीं उठता...और रिश्ते कायम होते देर लगती है (रीता की बांह पकड़ता है) पर अब इस मौत के साये में कुछ रिश्ते तय होकर रहेंगे...

रीता को अपनी तरफ खींचता है।

नीरा देखती हुई लाउंज से भाग जाती है।

रीता : मुझे छोड़ दे, नहीं तो...मैं कहती हूं...

उससे छूटने की कोशिश करती है।

सलमा : (एकदम उस पर झपटकर) बदजात! नाकारा...इसे छोड़ दे, नहीं तो खून हो जाएगा!

अयूब से रीता छूट जाती है, तीनों हांफते खड़े रहते हैं...आग बरसाती आंखों से सलमा और रीता उसे देखती रहती हैं।

रीता : मुश्किल सिर्फ यह है कि यहां से कहीं जाया नहीं जा सकता...

सलमा : तुम उधर जाओ...जाओ (रीता से कहती है)

रीता भी लाउंज में चली जाती है।

अयूब : (लाउंज की तरफ देखकर) वह छोटी लड़की कहां है?

उस तरफ एक कदम बढ़ता है तो सलमा उसे पकड़ लेती है।

सलमा : न...हीं...तुम...कहीं नहीं जा सकते...

अयूब : क्यों? मैं तुम्हें मौका देना चाहता हूं कि तुम मुझसे और नफरत कर सको...

जाना चाहता है।

सलमा : (सामने आकर) तुम उस लड़की के पास हरगिज-हरगिज नहीं जा सकते।

अयूब : लेकिन क्यों?

सलमा : क्योंकि वह...क्योंकि मैं...

अयूब : ओह! तुम अपनी वजह से कह रही हो...तो मतलब है कि तुम अब भी कहीं अन्दर से मुझे...यह अन्दर की आवाज क्या है?

सलमा : अन्दर बिल्कुल खामोशी है।

अयूब : है नहीं, थी! अभी कुछ पल पहले तक। अब वह खामोशी नहीं है...वहां अब कुछ और है...

सलमा : क्या है?

अयूब : एक खौफनाक आवाज़। एक साथ हंसने और रोने की...

चीखने और गुस्सा होने की।

सलमा : हंसना और रोना! कैसा हंसना और कैसा रोना...चीखना और गुस्सा होना...

अयूब : मैं तुम्हें तुम्हारे अन्दर की इन्हीं आवाजों का एहसास कराना चाहता हूं...कि फलां वक्त तुम्हारे अन्दर हंसी उबल रही थी...फलां वक्त तुम अन्दर से चीख रही थीं। फलां वक्त तुम्हारे अन्दर कुछ बेतरह टूट रहा था।

सलमा : तुम खामखाह यह सब सोच-सोचकर अपना जी खुश रखना चाहते हो।

अयूब : नहीं सलमा...तुम एक कब्रिस्तान हो, जिसमें यह यह-यह-यह सब दफन है।

सलमा : तुम...लेकिन तुमने उस लड़की को...

अयूब : ओह! वह बड़ी लड़की रीता! वह भी तुम्हारी ही तरह एक कब्रिस्तान बन रही है...क्योंकि उसका भोलापन, उसकी इन्नोसेंस भी मर चुकी है...जिसके बाद आदमी-औरत के भीतर सब कुछ दफन होता जाता है...कुछ भी भीतर से नहीं फूटता।

सलमा : फूटता है...गुस्सा और...

अयूब : और?

सलमा : नफरत...

अयूब : पर तुम्हारे अन्दर की आवाज नफरत की नहीं है...

सलमा : है!

अयूब : नहीं...यह नफरत की नहीं ऊब की आवाज है।

सलमा : जिसने मुझे खुदकशी के कगार तक पहुंचा दिया था!

अयूब : वह कगार अब भी मौजूद है। मुझे जहां जाना है, मैं चला जाता हूं। तुम्हें जहां जाना हो, तुम जा सकती हो।

सलमा : तुम इस वक्त मेरे पास से नहीं जा सकते।

अयूब : पर तुम तो मुझसे ऊब चुकी हो...

सलमा : हां, ऊब तो चुकी हूं!

अयूब : तो?

सलमा : पर खुदकुशी और अनचाही मौत में बहुत फर्क है!

अयूब : तो तुम चाहती हो कि मैं...

सलमा : कि इस अनचाही मौत के वक्त तुम मेरे पास रहो।

अयूब : लेकिन क्यों?

सलमा : क्योंकि मैं चाहती हूं। मैं तुमसे सिर्फ इतना ही चाहती हूं...सिर्फ इतना ही...

कोमल हो उठती है।

अयूब : सुनो, तुम सिर्फ चाहती हो, या मुझे भी चाह सकती हो...शायद वह रिश्ता हमारे बीच कब का टूट गया है!

सलमा : मैं नहीं जानती...मैं चाहती हूं कि तुम एक बार मुझे...

अयूब : नहीं...नहीं...नहीं क्योंकि तुम्हारी इन्नोसेंस मर चुकी है... तुम्हारा भोलापन कहीं खो गया है। उसके बाद भीतर सब कुछ सिर्फ दफन हो सकता है...और मैं सिर्फ दफन नहीं होना चाहता...मैं तुम्हारे भीतर भी जीना चाहता हूं...

लाउंज से रिकार्ड की धीमी-धीमी आवाज आती है।

सलमा : तो तुम समझते हो कि तुम...कि तुम मुझे जलील करके...

अयूब : यही-यही...बिलकुल यही कि मैं तुम्हें जलील करके...या तुम मुझे दफन करके जिंदा तो हम दोनों रह सकते हैं, जी नहीं सकते।

सलमा : तो तुम मुझे जलील करोगे...करते जाओगे?

अयूब : और तुम मुझे दफन करोगी और करती जाओगी।

सलमा : मैं तुमसे नफरत करूंगी और करती जाऊंगी!

अयूब : तो मैं भी तुम्हें जलील करूंगा और करता जाऊंगा!

सलमा : (चीखकर) चले जाओ यहां से...हट जाओ मेरे पास से... मैं तुमसे नफरत करती हूं...नफरत...नफरत!

अयूब : सचमुच! (वह चला जाता है)

रिकार्ड की आवाज तेज हो जाती है। रिकार्ड के गीत का कथ्य जिंदगी की हलचल का है।...उसमें शब्द न भी हों, उसकी लय से यह ध्वनित हो सकता है। जाज म्यूज़िक का तेज लय का कोई रिकार्ड हो सकता है। सलमा अपना मुंह ढांपे एक कोने में पड़ी रहती है। अयूब चला गया है। तभी पण्डित और झुनझुनवाला भीतर आते हैं। झुनझुनवाला अपना पोर्टफोलियो लिए हुए है।

पण्डित : (कुछ नशे में) बहुत अच्छे! यहां तो फेस्टिवल चल रहा है। (संगीत की आवाज सुनकर)

रीता और नीरा की हंसी की आवाज और यह आभास कि वे म्यूजिक की लय पर नाच रही हैं।

बहुत अच्छे!

झुनझुनवाला : पानी पहले से और ज्यादा नजदीक आ गया है।

पण्डित : हां, बढ़ता हुआ पानी...हंसी, नाच, संगीत। यह फस्टिवल तो है ही। मौत का समारोह!

झुनझुनवाला : लगता है सब लोग डर और दहशत से पागल हो गए हैं।

पण्डित : पागल! अरे झुनझुन...

झुनझुनवाला : झुनझुनवाला कहो।

पण्डित : हूं, अरे वाला, अब दोनों को मिला लो, जो तू अपने को पुकारता है। वह हो जाएगा...हां, पागलपन अपने-आप और अपने-आपके बीच की एक दीवार फलांग जाने का

नाम है। झुनझुन और वाला के बीच की दीवार फलांग जाने का। समझा!

सिगरेट निकालता है।

झुनझुनवाला : तुम्हारे सिगरेट तो खत्म हो गए थे!

पण्डित : हां, मगर अब बहुत हैं।

झुनझुनवाला : कहां से आए?

पण्डित : अन्दर स्टोर की पेटी से...

झुनझुनवाला : बिना पूछे ले आए?

पण्डित : आज यहां किसी भी चीज पर किसी की भी मिल्कियत नहीं है। किसी भी चीज की कोई कीमत नहीं है...

झुनझुनवाला : एक सिगरेट मुझे दो।

पण्डित : तुम पिओगे?

सिगरेट देता है।

झुनझुनवाला : मैं कुछ सोचना चाहता हूं।

सिगरेट सुलगाता है।

पण्डित : सोचने की ताकत रह गई है तुममें?

झुनझुनवाला : दिमाग की सब दरारें बन्द हो गई लगती हैं। किसी तरह उन्हें खोलना चाहता हूं।

पण्डित : पानी भर गया है? सोचने से क्या होगा?

झुनझुनवाला : सोचने से क्या होगा? मैंने सोच भी लिया है...

पण्डित : क्या?

झुनझुनवाला : कि आदमी आज भी अपने से बाहर की ताकतों से लड़ क्यों नहीं पाता?

पण्डित : तुम लड़ने की बात करते हो। औरों की लड़ने की ताकत सोखकर आज तुम लड़ने की बात करते हो...

झुनझुनवाला : मैं सोचता था, कोई भी स्थिति ऐसी नहीं होती, जिसमें कुछ न हो सकता हो!

पण्डित : कुछ न कुछ होता हर स्थिति में है...यह और बात है कि वह वह न हो, जो तुम चाहते हो।

झुनझुनवाला : एक बाढ़...एक भूचाल और आदमी का किया-धरा सब बेकार हो जाता है।

पण्डित : इतिहास यही है। पर झुनझुन...अब इतिहास का भी बंटवारा होगा...तुम्हारा इतिहास...और तुम्हारे विरुद्ध एक इतिहास।

झुनझुनवाला : इतिहास एक रद्दी की टोकरी है जो जब कागज की गेदों से भर जाती है तो खाली कर दी जाती है...

पण्डित : फिर भी इतिहास से ही एक समाप्ति और दूसरी शुरुआत का एहसास होता है।

झुनझुनवाला : यह भी कोई शुरुआत है क्या?

पण्डित : किसी न किसी रूप में तो है ही...तुम्हारे लिए न सही।

झुनझुनवाला : मेरे पास इतना कुछ है...मेरी इतनी-इतनी योजनाएं हैं, इतनी शुरुआतों की रूपरेखा मेरे दिमाग में है...

पण्डित : हैं नहीं, थीं।

झुनझुनवाला : थीं नहीं, हैं। जिस क्षण तक आदमी जिन्दा है...

पण्डित : यही तो त्रासदी है कि जब तक आदमी जिंदा रहता है, तब तक समझता है कि है, और जब वह 'था' हो चुकता है, तब वह जिंदा नहीं होता। वह अपने से पीछे के इतिहास को ही देख पाता है, अपने को इतिहास होते नहीं देख पाता। अपने गुजर जाने का साक्षी नहीं होता।

झुनझुनवाला : (बिगड़कर) तुम अन्दर से पस्त हो चुके हो, मैं अब भी पस्त नहीं हूं।

पण्डित : तुम पस्त नहीं हो, ऐसा नहीं है...तुम अपनी पस्ती को स्वीकार करते डरते हो...

झुनझुनवाला : तुम बहुत पी गए हो!...चुप करो। मुझे सोचने दो...कोई न कोई रास्ता जरूर होना चाहिए। जिससे...

पण्डित : जिससे इतिहास से बचा जा सके...एक रास्ता है...

झुनझुनवाला : कौन-सा...किधर...

पण्डित : सीधे समंदर की तरफ।

झुनझुनवाला : तुम होश में नहीं हो।

पण्डित : (ताश की गड्डी निकालकर) आओ, दो हाथ हो जाएं, अभी पता लग जाएगा कि कौन होश में नहीं है...

ताश फेंटता है।

झुनझुनवाला : ताश छोड़ो...मुझे कुछ जरूरी काम करने हैं... (पोर्टफोलियो खोलकर चैकबुक निकालता है) मैं सब कर्जे अदा करके मरना चाहता हूं।

पण्डित : अदा करके या वसूल करके?

झुनझुनवाला : वसूल भी करना है। रमी के दो सौ सत्तानवे रुपये बीस पैसे तुम्हारे ऊपर हैं...याद है?

पण्डित : याद है। लेकिन मैंने यह कब कहा कि मैं कर्जा अदा करके मरना चाहता हूं।

झुनझुनवाला : खैर...(एक चैक लिखकर) ये दो लाख पांच हजार का चैक लालचंद बालचंद को दे देना...उनका कमीशन देना था। ये एक लाख सत्ताईस हजार पांच सौ ठेकेदार गुरनानी को...(तीसरा लिखता है) और तीन लाख चालीस हजार लोहे वाले टेकचंद को। ये पैंतीस हजार इंजीनियर चटर्जी का कमीशन...

पण्डित : लेकिन चटर्जी तो चैक लेगा नहीं। कैश लेगा...

झुनझुनवाला : (सारे चैक फाड़कर पण्डित को देते हुए) इस वक्त और

कुछ नहीं किया जा सकता...कैश कहां है?

पण्डित : लेकिन क्या तुम वह सब कर्जे भी उतार सकते हो जो तुम्हारे खून को अदा करने हैं?

झुनझुनवाला : हवाई बातें बाद में करना...

पण्डित : और ये चैक मुझे दे रहे हो जैसे यह सब हवाई नहीं है...कि मैं इस तैरती मौत से बचकर जाने वाला हूं!

झुनझुनवाला : (जैसे समझकर) हैं!

तभी अब्दुल्ला बदहवास चीखता आता है। पीछे-पीछे नियामत भी है, पर काफी पीछे।

अब्दुल्ला : वह अन्दर आ गया है...अन्दर आ गया है।

झुनझुनवाला : क्या?

पण्डित : अब्दुल्ला!

नियामत एक क्लाक पकड़े घबराया भीतर आता है।

नियामत : (चीखता हुआ) पानी अन्दर आ गया है...पानी अन्दर आ गया है...(क्लाक दबाए हुए) जो-जो चीजें बचानी हों, बचा लीजिए। अरे सब यहां है?

नियामत इधर-उधर देखता है। फिर आवाज लगाता है।

अयूब साहब! सैलाब भीतर आ गया है! गुड्डो...नीरा... बेगम साहिबा...

सब भौंचक्के रह गए हैं। सलमा आंखें खोलती है।

झुनझुनवाला : मुझे सिर्फ यह पोर्टफोलियो बचाना है...इसमें वह सब है जो औरों के हाथ पड़ गया, तो मैं कुत्ते की मौत मारा जाऊंगा...

पण्डित : (अपने ताश की गड्डी दिखाकर) मुझे सिर्फ ताश।

नियामत : (अपनी क्लाक दिखाकर) मुझे यह घड़ी...इसकी सुइयों के मुताबिक मुझे क्लब खोलना-बन्द करना पड़ता है।

अब्दुल्ला : (हिसाब की कापी उठाकर) मुझे यह हिसाब की कापी... नहीं तो शफी साहब कभी माफ नहीं करेंगे...

रीता भागी हुई आती है।

रीता : (तमाम रिकार्ड लिए हुए) मुझे यह संगीत!

सलमा चुपचाप आगे आ गई है और वह खामोश खड़ी है।

नियामत : आपकी बेगम? आपकी कोई चीज अन्दर हो तो...

सलमा : मेरा? अन्दर! कुछ भी तो नहीं है।

अब्दुल्ला : आपके वो?

सलमा : मेरे वो? मेरे वो कौन?

रीता : वही अयूब। मैं लाउंज में खड़ी आईने में अपने को देख रही थी तो वह पीछे आकर खड़ा हो गया और बोला—किसे देख रही हो इसमें!

पण्डित : मैं जब बाहर था तो अयूब मेरे पास आया था...मुझसे बोला—ताश के खेल देखोगे? पर मैंने गड्डी उसे नहीं दी।

झुनझुनवाला : मेरे पास भी आया था...पूछ रहा था, यहां कहीं रस्सा नहीं मिल सकता? शायद दरिया पार करने की कोई तरकीब सूझी थी उसे...

नियामत : लाउंज के बाहर अयूब साहब मुझसे कागज और कलम मांग रहे थे।

अब्दुल्ला : और मुझसे शराब की एक और बोतल।

सलमा : उन्हें सबसे कुछ न कुछ चाहिए। किसी से कुछ लेना है, किसी को कुछ देना। सिर्फ मुझसे ही उन्हें कुछ नहीं चाहिए।

नियामत : लेकिन वो हैं कहां?

सलमा : वो किसी की तलाश में है।

झुनझुनवाला : किसी की तलाश में?

सलमा : एक लड़की की तलाश में।

नियामत : कौन लड़की यहां नहीं है? नीरा...

तभी अयूब आता है। शराब की बोतल लिए हुए।

अयूब : अरे यह क्या? (सबको देखकर)

सलमा : नीरा कहां है?

अयूब : मुझे क्या मालूम?

पण्डित : (उसे कालर से पकड़ता है) नहीं बताओगे?

सलमा : अगर तुमने उसे खराब करके पानी के हवाले कर दिया है तो बता क्यों नहीं देते?

अयूब : (पण्डित का हाथ कालर से आसानी से हटा देता है) तुममें से कोई नहीं बता सकता, इसका नतीजा यह तो नहीं निकाला जा सकता कि मैं बता सकता हूं। (शराब का घूंट लेने की कोशिश करता है)

पण्डित : (झटके से अयूब की बोतल दूर गिरा देता है) बताता है कि नहीं? (उसकी गर्दन थामता है)

सलमा : (जैसे कुछ आहट लेकर) छोड़ दो इसे।

पण्डित : यह बताता क्यों नहीं?

सलमा : मैं बताती हूं।

झुनझुनवाला : तुम्हें पता है?

सलमा : सब लोग खामोश हो जाओ...एक पल के लिए...

सब लोग खामोश होकर सुनते हैं। नीरा के सुबकने की आवाज आती है। वह आवाज पास आती जाती

है। फिर नीरा अन्दर आती है। रोती, सुबकती।

रीता : नीरा...नीरा...क्या हुआ है तुझे?

नीरा : (एक क्षण रीता को देखकर उससे लिपट जाती है, रोती हुई) मुझे बहुत डर लग रहा है दीदी...

रीता : किस चीज से...

नीरा : हर चीज से। अंधेरे से, तुम सबसे...मुझे तुमसे भी आज डर लग रहा है, दीदी। तुमसे भी। (कहते हुए वह अयूब की ओर फटी-फटी आंखों से देखती है और एकदम चीख पड़ती है) इस...इस दरिंदें से, दीदी...(और रो पड़ती है)

तभी कुछ और गिरने की आवाज; पानी का बेतहाशा शोर। सब लोग अवाक्, हताश, सहमे-डरे खड़े रह जाते हैं। फिर ऐसा अभिनय कि जैसे पानी का रेला वहां भी आ गया हो, जहां सब लोग खड़े हैं। सब पानी से बचने की कोशिश करते हैं।

झुनझुनवाला :
नियामत :
रीता :
पण्डित : } पानी...पानी आ गया...ओह...अब क्या होगा!

अब्दुल्ला : या खुदा...या खुदा...या खुदा!

नियामत : खुदा को पीछे छोड़कर आगे चलो अब...

अब्दुल्ला : खुदा को पीछे छोड़कर तो आगे दोजख ही दोजख है।

अयूब : हम इस वक्त जहां हैं, वह दोजख ही है।

पण्डित : सबने इतनी चीजें जमा की थीं, एक लालटेन भी रख ली होती तो कितने काम आती!

झुनझुनवाला : यह पता नहीं था कि बिजली भी दगा दे जाएगी।

पण्डित : यह कहो कि यह पता नहीं था कि रोशनी तुम्हें भी दगा दे जाएगी...

झुनझुनवाला : क्या?

पण्डित : हां।

अयूब : इस वक्त उस बिजली की फिक्र करो जो अपने भीतर गुल होने को है...

अब्दुल्ला : आदमी की बनाई सभ्यता ऐन वक्त पर दगा दे जाती है...

पण्डित : आदमी की सभ्यता। अपनी सभ्यता कहो...जो यहां-वहां कुछेक जगहों पर ही रोशनी दे रही है और किसी भी वक्त दगा दे सकती है।

नियामत : अब यहां से निकलने की तरकीब कीजिए...नहीं तो यहीं घिर जाएंगे और यह इमारत हमें दफन कर लेगी...

अब्दुल्ला : या खुदा।

पण्डित : सब लोग एक-दूसरे की बांहें थाम लें और बाहर निकलने

की कोशिश करें...

सब एक-दूसरे की बांहों में बांहें डाल लेते हैं। अंत में अयूब और सलमा की कड़ी टूटी रह जाती है। पर सलमा संभलती हुई चल रही है। नीरा थकी है। अंधेरे में पानी के बीच से रास्ता टटोलता ग्रुप।

नियामत : होश। साहबा...(जैसे गहरे पानी में चला गया हो)।

पण्डित : संभाल के...

झुनझुनवाला : बहुत अंधेरा है। कुछ दिखाई नहीं देता...

अब्दुल्ला : या खुदा! शफी साहब ने छुट्टी नहीं दी...

रीता : (नीरा से) तू ठीक से चल क्यों नहीं रही?

नियामत : होश...होश...

सलमा : (अयूब से) हम लोग इस वक्त कहां जा रहे हैं?

अयूब : किसे पता है! सिर्फ इतना पता है कि जा रहे हैं।

पण्डित : झुनझुन...वो चैक कहां हैं?

झुनझुनवाला : अरे मरा...बचाओ! (एकदम जैसे गहरे में चला गया हो)

रीता : (नीरा से) तेरी बजह से और लोग भी ठीक से नहीं चल पा रहे हैं। कायदे से चल।

नीरा : मुझसे नहीं चला जाता। तुम लोग मुझे छोड़कर आगे जा सकते हो।

रुकती है।

रीता : रुक नहीं, चलती चल।

नीरा : नहीं।

रीता : क्यों?

नीरा : पानी से चलकर पानी में आगे की क्या तुक है?

रीता : सब लोग सूखी जमीन तलाश कर रहे हैं।

नीरा : मुझे उन सबसे क्या लेना-देना! मुझे नींद लग रही है...

रीता : सोओगी कहां?

नीरा : पता नहीं, जहां भी हो।

नीरा : तुझे पता है, बगैर सूखी जमीन के सोया नहीं जा सकता!

नीरा : मैं तुम्हारे कंधे पर सिर रखकर सो लूंगी।

झुनझुनवाला : ओ साली...मछली ने काट लिया!

पण्डित : अभी क्या हुआ है, अभी तो तुझे नन्हे-नन्हे कीड़े-मकोड़े तक काटेंगे...

अब्दुल्ला : वो देखो सामने पत्थर है...

झुनझुनवाला : हम लोग कुछ देर पत्थर पर बैठ सकते हैं।

पण्डित : ये पत्थर कितनी देर टिकेंगे...

नियामत : होश...होश साहबा

झुनझुनवाला : लगता है मेरे पैर से लहू बह रहा है...

अब्दुल्ला : या खुदा...शफी साहब से पूछना परवरदिगार कि मुझे छुट्टी क्यों नहीं दी! मैं लड़के का मुंह तक नहीं देख पाया।

तभी सलमा बैठ जाती है। जैसे पत्थर मिल गया हो और पैरों तले पानी बह रहा हो। रीता भी नीरा का सिर कंधे से लगाए बैठ जाती है—दूर, दूसरे पत्थर पर। बाकी लोग आगे बढ़ गए हैं। अयूब उसे बैठा देखकर आता है।

अयूब : तुम रुक क्यों गईं?
सलमा : क्योंकि मुझे अंत नजर आ रहा है।
अयूब : वह नजर सबको आ रहा है, मगर अभी आया नहीं। चलो...
सलमा : नहीं!
अयूब : तो तुम्हें ज़बरदस्ती घसीटकर ले चलना पड़ेगा।
सलमा : जबरदस्ती! आज भी!
अयूब : तुम्हें आत्महत्या नहीं करने दी जाएगी।
सलमा : मैं आत्महत्या तो कब की कर चुकी हूं। आज तो सिर्फ...
अयूब : दूसरों की हत्या करने जा रही हो?
सलमा : मैं किसी दूसरे के लिए जिम्मेदार नहीं हूं।
अयूब : (अब्दुल्ला से) इसे उठाकर ले चल सकते हो...
सलमा : मैं नींद में या बेहोश नहीं हूं।
अब्दुल्ला : लेकिन मैं तो खुद ही यहां बैठ जाना चाहता हूं।
रीता : (वहीं से बैठे-बैठे) अब्दुल्ला!...मैं भी यहीं रुक रही...हूं...।
अयूब : (अब्दुल्ला से) तुम नहीं बैठ सकते...शफी साहब को क्या जबाब दोगे?

बाकी लोग चलते जा रहे हैं। रीता कुछ दूर पर नीरा को लिए बैठी है। अब्दुल्ला भी चल पड़ा है। सलमा रुकी हुई है। अयूब उसके पास खड़ा है।

अयूब : (सलमा से) तुम चलोगी नहीं?
सलमा : नहीं।
अयूब : तुम जानती हो मैं तुम्हारा हठ छुड़ा भी सकता हूं।
सलमा : छुड़ा सकते हो?
अयूब : हां।
सलमा : अपने हठ से...
अयूब : नहीं।
सलमा : तो...
अयूब : (अनुरोध से उसका हाथ-हाथ में लेकर) चलो...मैं कह रहा हूं।
सलमा : (आधी पिघलकर) नहीं...

उठ खड़ी होती है।

अयूब : तुम मरना क्यों चाहती हो?
सलमा : कोई जीना क्यों नहीं चाहता है?
अयूब : जीना सिर्फ जीने के लिए।

सलमा : मरना सिर्फ मरने के लिए।

अयूब : जिद नहीं करते...देखो, मैं तुमसे कुछ मांग रहा हूं इस वक्त।

सलमा : तुमने पहले भी कितना कुछ मांगा है, मगर हर बार तुम्हारी मांग स्वीकार कर लेने का कुछ भी फल नहीं मिला।

अयूब : देखो, तुम मुझे जानती हो...

सलमा : मै तुम्हें? मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं जानती।

अयूब : नहीं जानतीं? कितनी बार कह चुकी हो कि जितना तुम मुझे जानती हो...

सलमा : वह मैं अपने को धोखा देती रही हूं। अपने को झुठलाती रही हूं और अपने साथ तुम्हें भी...मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं जानती।

अयूब : अगर ऐसा ही है तो एक बार जान लेने की एक और कोशिश कर लेना बुरा नहीं है।

सलमा : एक और कोशिश? कब, कहां, किस वक्त?

अयूब : आज, यहीं, इस वक्त!

सलमा : पर क्यों?

अयूब : क्योंकि मैं खुद एक बार अपने को जान लेने की कोशिश कर लेना चाहता हूं।

अयूब खुद भी बैठ जाता है। सलमा को भी बैठा लेता है। दोनों ऐसे बैठते हैं जैसे पानी पहले से बढ़ गया हो।

सलमा : तुम आगे नहीं जाओगे?

अयूब : नहीं।

सलमा : फिर शायद वक्त भी नहीं रह जाएगा। पानी बढ़ रहा है।

अयूब : पानी को बढ़ने दो। तुम्हारा मुझे जान लेना जीते रहने से ज्यादा जरूरी है। तुमने कहा—तुम मुझे बिल्कुल नहीं जानतीं, और मैं भी जानता हूं कि नहीं जानतीं...

सलमा : मैं तुम्हें सचमुच नहीं...पर तुम चले जाओ अब।

अयूब : नहीं।

सलमा : तुम्हारा हठ किसलिए है?

अयूब : यह हठ नहीं है।

सलमा : नहीं है।

अयूब : तुम्हें लगता है यह हठ है?

सलमा : जितना मैं तुम्हें जानती हूं...

अयूब : जानती हो!

सलमा : पता नहीं...

अयूब : और मैं तुम्हें...

सलमा : तुम मुझे बिल्कुल नहीं जानते?

अयूब : मैंने कहा न, जानने की एक बार और कोशिश की जा सकती है।

सलमा : यहां वक्त नहीं है।

अयूब : तो फिर...

सलमा : वे लोग कहां पहुंच गए हैं!

अयूब : पता नहीं, अंधेरे में कुछ पता नहीं चलता।

सलमा : (खड़ा होती है। अयूब का हाथ पकड़ती है) आओ चलें...

अयूब : जानने के लिए रुकोगी नहीं?

सलमा : (मुसकराकर) मुझे नहीं लगता कि रुककर भी जान पाऊंगी...

अयूब : लेकिन मैं...

सलमा : आओ, चलो...

उसे घसीटकर ले चलती है।

दूसरी चट्टान पर बैठे अब्दुल्ला, नियामत, झुनझुनवाला और पण्डित, पास की चट्टान पर नीरा के लिए बैठी रीता। अब अयूब और सलमा कुछ दूर चलकर अंधेरे में गुम हो गए हैं।

पण्डित : (रीता से) यह सो गई हैऽऽ क्याऽऽ?

रीता : न...हीं....बेहोऽऽश होईऽऽ गऽऽ हैऽऽ

पण्डित : अच्छा है।

झुनझुनवाला : क्या?

पण्डित : कि वह बेहोश है। उसे पता नहीं लगेगा कि पानी अब भी बढ़ रहा है।

नियामत : यह भी पता नहीं लग रहा कि यह कौन-से दरिया का पानी है, और ये कौन-से का है।

अब्दुल्ला : लिद्दर और शेषनाग का है...

पण्डित : पर कौन-सा पानी किसका है?

झुनझुनवाला : ये दोनों दरिया—लिद्दर और शेषनाग—आज तक एक-दूसरे से दूर और अलग बहते थे...

पण्डित : और तुम्हारे पैर तले इनके बीच की जमीन थी।

(तेज जलती आंखों से उसे ताकता है) पानी और बढ़ रहा है।

पानी की आवाज जरूरत पड़ने पर जगह- जगह आती रहती है।

अब्दुल्ला : अब कोई तरीका नहीं है!

नियामत : है। आंखें मूंदकर उस पल का इन्तजार किया जाए।

पण्डित : क्योंकि खुली आंखों से उस पल को नहीं देखा जा सकता।

रीता : (वहीं से) पर मैं...इन्तजार नहीं करूंगी। इससे पहले कि

पानी मुझे आ ले, मैं खुद ही इसमें...

नीरा को लिपटाकर खड़ी होती है।

जब तक रीता नीरा को लिपटाकर खड़ी होती है तब तक अयूब और सलमा पानी पार करते उस पत्थर तक आ गए हैं। रीता कूदने को होती है कि अयूब उसे पकड़ता है। सलमा नीरा को संभालती है।

अयूब : यह क्या कर रही हो?

उसे पकड़ता है।

रीता : मुझे छोड़ दो। मैं अपने निर्णय से अपना अन्त कर लेना चाहती हूं। मैं एक जानवर की तरह बहा ली जाना नहीं चाहती। तुम सब लोग जानवर हो, जो बहा लिए जाने का इन्तजार कर रहे हो...

अयूब : तुम बैठ जाओ...मैं कहता हूं बैठ जाओ!

रीता : क्यों?

अयूब : क्योंकि संभावना जीने की भी हो सकती है।

रीता : अब भी हो सकती है।

अयूब : सम्भावना कभी भी कभी तक हो सकती है।

रीता : तुम सब लोग झूठे हो। खोखेले हो। अपने को झूठी आशा और खोखले विश्वास में रखकर जी सकते हो। लेकिन मैं यह स्वीकार नहीं कर सकती...मुझमें अब ताब नहीं है।

अयूब : तुम्हारे पास आशा के लिए बहुत कुछ है। तुम जवान हो।

रीता : मैं जवान हूं। इसलिए मुझमें अन्त को स्वीकार लेने का साहस है। तुम लोग साहसहीन हो। नपुंसक हो!

अब्दुल्ला, नियामत, झुनझुनवाला और पण्डित अब तक बीच का पानी पार करके रीता वाली चट्टान तक आ गए हैं।

पण्डित : तुम ठीक कहती हो...

रीता : अगर तुम लोग अन्दर से बिल्कुल मिट्टी नहीं हो गए हो, तो सब अपनी-अपनी इच्छा और अपने चुनाव से अपना अन्त तय करो।

झुनझुनवाला : यह चुनाव नहीं, मजबूरी को चुनाव का नाम देने की कोशिश है।

पण्डित : नहीं, रीता बिल्कुल ठीक कहती है...मेरी आज तक की जिन्दगी एक नपुंसक आदमी की जिन्दगी नहीं रही? रही है! किसलिए? सिर्फ जिन्दा रह सकने के लिए? नहीं! नहीं! नहीं! जिन्दा रह सकने के लिए नहीं, दूसरों की तरह जिन्दा रह सकने के लिए। इस दोगले दौर में मैं खुद

अपना आप बनकर अपने लिए नहीं रह पाया...मैं एक साया बनकर रह गया, जो कभी इससे, कभी उससे चिपक जाना चाहता था। कभी इस जैसा या उस जैसा हो सकने के लिए स्वांग बदलता रहता था। घर था। पर घर की ज़िन्दगी नहीं थी। बीवी है पर बीवी नहीं है...उसकी तस्वीरें औरों के बटुओं में बन्द हैं (झुनझुनवाला को आग उगलती आंखों से देखता है) महीनों बाहर भटकना...यह और यह और यह हासिल करके खुश होना चाहना, पर उदास होते जाना...यही मेरा प्राप्य था। पीछे घर में क्या होता था, पता नहीं। एक झूठा खेल। एक-दूसरे को विश्वास दिलाते रहने का। कुछ था, जिससे मैं अपनी हर जीत के साथ हारा हुआ महसूस करता था। कुछ था, जिससे मैं हर वक्त भागना चाहता था...और इस बार इस झुनझुन के साथ यहां आया था, तो भी भागकर...इसी से भागकर इसी के साथ।...इस आदमी के साथ? जिसके चेहरे से मुझे नफरत है। इसने हमेशा एक कठपुतले की तरह मुझे साथ रखा है। मैं इसके लिए ताश की बाजी का वह हाथ हूं जो इसके हाथ में है...मैं इस वक्त भी इसका मुंह जोहता हुआ, इसी के ताशों की गड्डी हाथ में लिए नहीं मरना चाहता...(ताश जेब से निकालकर बिखराकर फेंक देता है) यह रही इसके ताशों की गड्डी जिसे खेल-खेलकर मैं खोखला हो चुका हूं। यह कमीज (कमीज उतारता है) यह भी इसकी पसन्द की है। (उतारकर फेंक देता है) यह पतलून... (पतलून उतारता है) यह भी इसकी पसन्द की है...(फेंक देता है) मैं यह सब पहन-पहनकर खुश होता रहा हूं क्योंकि ये खुश होता था। मैं इसकी खुशी से जीता रहा हूं, पर मरते वक्त इसकी खुशी साथ नहीं रखूंगा...मैं मरूंगा अपने नंगेपन के साथ...हालांकि यह नंगापन भी बिलकुल मेरा अपना नहीं है।

कूदना चाहता है।

झुनझुनवाला : (चीखकर) ठहरो...पण्डित, ठहरो!

पण्डित : (ठिठक जाता है) देखा तुमने, तुम्हारा हुक्म सुनने का कितना आदी हो गया हूं कि तुम्हारे 'ठहरो' ने इस वक्त भी मेरे पांव रोक दिए है।

झुनझुनवाला : सुनो पण्डित...तुम आए थे मेरे साथ। मेरे कहने से। पर अब तुम्हारे फैसले को स्वीकार करके मैं तुम्हारे साथ ही

चल देना चाहूंगा...

अब्दुल्ला : या खुदा...या खुदा...

नियामत मुंह बनाकर आंखें और कान बन्द कर लेता है। बाकी लोगों की प्रतिक्रियाएं— आश्चर्य की।

पण्डित : तुम झुठे हो...तुम फिर कोई साजिश कर रहे हो।

झुनझुनवाला : अभी तक ऐसा ही था, पर अब इस क्षण के बाद ऐसा नहीं है...मेरा इतिहास सिर्फ मैं नहीं हूं...

पण्डित : हां, सिर्फ तुम नहीं हो। एक गलत इतिहास ने तुम्हें बनाते-बनाते, तुम्हें ही इतिहास बनाने का हक दे दिया...

झुनझुनवाला : हां...मैं पैदा हुआ तो पहला मन्त्र मेरे कान में फूंका गया था कि दुनिया में बड़ी मछली छोटी मछली को खाकर ही जी सकती है। और बड़े होने के साथ-साथ मैंने जाल बुनने सीखे। हर जाल में सैकड़ों मछलियों को उलझाया और खुश होता रहा। दूसरे लोग कहते थे पैसों के पेड़ नहीं लगते। पर मेरे लोग कहते थे, लगते हैं और खूब लगते हैं। मैंने पैसों के पेड़ लगाकर देखे...वे लगे, फूले-फले...जब पेड़ फूल-फल गए तो मैंने धर्म, नैतिकता, विज्ञान, राजनीति-सबको अपने मूल्य दिए...मूल्य (हंसता है)। सीधे-सीधे कहूं तो सबको अपना व्यापार बनाया। इसका दाम इतना। उसका दाम उतना। हर चीज, हर बात का प्रतिनिधि मैं था। मैं सबसे बड़ा मछलीमार था जिसके कारखाने में बड़ी-से बड़ी मछलियां डिब्बों में बन्द की जाती थीं। बड़ी से बड़ी ह्वेल मछली के लिए मैंने चारा ईजाद किया...पर आज इस वक्त मैं देख रहा हूं कि मैं खुद भी एक मछली हूं। पानी में तैरती मछली नहीं, अपने ही जाल में फंसकर तड़पती, अपने ही डिब्बों में बन्द। मैं आज तक सैकड़ों जवान लड़कियों के साथ सोया हूं... उनकी मर्जी से नहीं, अपनी मर्जी से। अपने दोस्तों के घरों को भी मैंने नहीं छोड़ा (पण्डित को हताश भाव से देखता है) मैंने सैकड़ों कत्ल कराए। करोड़ों का माल स्मगल किया। लाखों रुपये रिश्वत में दिए, करोड़ों का टैक्स बचाकर काला धन जमा किया...इस देश के भीतर एक और अपना ही, अपनी सुविधाओं का देश बनाया, मैं अखबारों में पढ़ता था...लोग वातावरण के दूषण के इलाज ढूंढ़ने की कोशिशें कर रहे है। आबोहवा में तर गए

जहर को साफ करने की तरकीबें खोज रहे हैं...कमेटियां बन रही हैं। कमीशन बैठाए जा रहे हैं...सब पढ़कर मुझे हंसी आती थी। क्या कोई भी कमेटी, कोई भी कमीशन इस वातावरण को मुझसे साफ कर सकता है?...लेकिन, लेकिन...आज मैं जान सका हूं कि मैं दूसरों की ही मौत नहीं, खुद अपनी मौत भी हूं...इस बाढ़ पर मेरा वश नहीं है...यह दरियाओं के मिल जाने से आई बाढ़ जिसने बीच की जमीन को, मेरे द्वीप, मेरे टापू को नेस्तनाबूद कर दिया है...पण्डित! आज एक बार मुझे अपना साथ दे लेने दो। मैं तुम्हारी तरह चलते हुए भी अपने को बिल्कुल नंगा कर पाऊंगा...क्योंकि मैं अपने नंगेपन को देखने लायक भी नहीं रह गया हूं। अब जो भी, जैसा कुछ भी है उसी के साथ मुझे भी मर लेने दो...

नियामत आंखें और कान खोल लेता है। सब अवाक् देख रहे हैं।

अब्दुल्ला : या खुदा मेरी समझ में कुछ नहीं आता...

नियामत : खुदा की समझ में कुछ आ रहा है! हम उसके बगैर भी बच सकते हैं।

सलमा : लेकिन पानी तो अब भी बढ़ रहा है...इतना पानी चढ़ आया है। इसमें बचने-बचाने के कुछ मानी नहीं हैं।

अब्दुल्ला : फिर भी एक इन्सानी कोशिश...

पण्डित : इन्सानी...यह शब्द कितना बेमानी है...

अयूब : तो फिर आइए...हम सब एक साथ मिलकर आत्महत्या कर लें...एक-दूसरे के हाथ पकड़कर इस तेज बहते पानी में कूद पड़ें।

नियामत : सचमुच?

अयूब : हां, क्यों? तुम सबके साथ नहीं मरना चाहते...

नियामत : नहीं, मेरे पास अपने कारण हैं।

पण्डित : अब्दुल्ला तुम?

अब्दुल्ला : जी...मैं नहीं...

पण्डित : क्यों?

अब्दुल्ला : मुझे अपने लड़के का मुंह देखना है और शफी साहब का हिसाब देना है।

पण्डित : क्यों नियामत, फिर सोच ले।

नियामत : नहीं...मेरी बूढ़ी मां की देखभाल करनेवाला कोई नहीं है। और क्लब की चाबियां मेरे पास हैं...सोमनाथ जी को देनी हैं...पर मां का ख्याल...

पण्डित : (हंसकर) मां! लड़का! लड़का क्या है? मां क्या है?

लड़के से यह-यह-यह होगा। मां यह-यह-यह करेगी। इसके अलावा? खैर छोड़ो...अयूब साहब आप? आपने ही सामूहिक आत्महत्या की बात सुझाई थी...

अयूब : हां, अब्दुल्ला और नियामत के कारण और हो सकते हैं। पर हम दोनों अपने ही कारणों से आत्महत्या करने आए थे। यह सलमा यह...यह और वह चाहती थी। पर इसे यह और वह जिंदगी और मुझसे नहीं मिला। मैं यह, यह और वह चाहता था। पर मुझे यह और वह जिंदगी और इससे मिला नहीं।

सलमा : मैंने तुम्हें सब कुछ दिया, फिर भी तुम्हें कुछ नहीं मिला।

अयूब : मैंने भी तुम्हें अपना सब कुछ दिया, फिर भी तुम्हें कुछ नहीं मिला।

पण्डित : यह झगड़े का वक्त नहीं है। हां रीता...

रीता : मैं अपनी मर्जी से मर सकती हूं। मुझे आप लोगों के साथ की जरूरत नहीं है। और चाहूं तो अपनी मर्जी से तब तक जी सकती हूं जब तक जी सकने के सिलसिले बाकी हैं।

झुनझुनवाला : अब देर मत करो...देर होने से कष्ट बढ़ता है।

अयूब : पर ये लड़की...(नीरा की ओर इशारा करता है)।

झुनझुनवाला : इसे हम पानी में धकेल सकते हैं।

अयूब : लेकिन उसकी अपनी मर्जी का पता कैसे लगेगा? यह तो बेहोश है।

पण्डित : हां, आती हुई मौत भी नहीं आती।

झुनझुनवाला : अब मौत को किस बात का इन्तजार है? क्या मौत भी अपना पूरा खेल दिखाकर अपने वक्त से आना चाहती है?

नीरा बेहोशी से जागती है।

नीरा : दीदी...(बहुत पीड़ा से) तुम सब अभी जिंदा हो। ओह ओह ओह...

नियामत और अब्दुल्ला सहसा महसूस करते हैं कि पानी कम हो रहा है।

नियामत : (उछलकर खड़ा होता है) पानी कम हो रहा है।

अब्दुल्ला : हां...देखिए...देखिए...पानी घट गया है...बाढ़ उतर रही है। (एकदम मुड़कर) उधर देखिए...टार्च की रोशनियां और रस्सियां। वे हमें बचाने के लिए रस्सों के सहारे आ गए हैं।

दूर से आवाजें...होशियार...अब्दुल्ला...तुम लोग कहां हो...हम लोग आ गए हैं...और टार्च की रोशनियां। सीढ़ियां। दूर पर से आती कोलाहल की आवाज़।

नियामत : पानी एकदम उतर गया है। हम लोग क्लब की जमीन पर चढ़ लें...

सब जैसे पानी से निकलकर सूखी जमीन पर आ जाते हैं। अपने कपड़े निचोड़ते हुए।

अब्दुल्ला : हा!...अब जान में जान आई...या खुदा...

नियामत : अब कोई खतरा नहीं है...हम बच गए हैं। उधर से मदद आ रही है।

खतरा टल जाने पर सब एक-दूसरे से कतराते हुए लोग। सब लोग अपने कपड़े और तौर-तरीके ठीक करते हैं। सलमा अयूब को देखकर रीता को देखती है। रीता जलती आंखों से अयूब को देखती है।

पण्डित : झुनझुन...

झुनझुनवाला : तमीज से बात करो...झुनझुन नहीं झुनझुनवाला। अपनी औकात का कुछ ख्याल है तुम्हें?

नीरा : (एकदम अवाक्) क्या हुआ? क्या हुआ...मुझे बताओ क्या हुआ?

रीता : कुछ नहीं...एक नाटक पूरा होते-होते रह गया। एक इतिहास घटित होते-होते रुक गया।

टेलीफोन की घंटी...अब्दुल्ला बेतहाशा भागता है।

अब्दुल्ला : (रिसीवर उठाकर) हल्लो...जी...टूरिस्ट क्लब आफ इण्डिया...कौन, शफी साहब! जी...सलाम साहब, सलाम साहब...जी हां...जी हां...जी, जी जी हां...

परदा

●●●